परिशिष्ट

प्रभात

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की दण्डकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी का तिमाही मुख-पत्र

वर्ष-25 अंक-3 & 4 का परिशिष्ट जुलाई-दिसंबर 2013 सहयोग राशि-15 रुपए

मौत से जूझते हुए भी अंतिम सांस तक जनता की सेवा करने वाली वरिष्ठ कम्यूनिस्ट महिला योद्धा कामरेड गज्जला सरोजना (अमरा, शहीदा) को लाल-लाल सलाम!

भाकपा (माओवादी) की वरिष्ठ महिला योद्धाओं में से एक कामरेड गज्जला सरोजना की 11 दिसंबर, 2013 को गंभीर अस्वस्थता के चलते शहादत हुई। लंबे समय तक जन सेवा व जनयुद्ध में भागीदारी के बाद केंसर बीमारी की वजह से उनकी सांसे आखिर थम गयीं। पांच दशक पहले आन्ध्रप्रदेश के आदिलाबाद जिले में स्थित सिंगरेणी कोयला खदानों के एक मुख्य केंद्र बेल्लमपल्ली शहर के कन्नाला बस्ती के एक मध्य वर्गीय क्रांतिकारी परिवार में कामरेड सरोजना का जन्म हुआ था। पिता सामिनाथ ड्रायवर थे। मां गज्जला लक्ष्मी मेग्जिम गोर्की के प्रख्यात उपन्यास 'मां' की मां के समान क्रांतिकारी, मजदूर आन्दोलनों का समर्थन करती हुई आज भी जीवित हैं। सिर्फ समर्थन तक ही सीमित न होकर उन्होंने तो अपने बच्चों को भी क्रांतिकारी आन्दोलन में शामिल होने प्रोत्साहित किया। कामरेड सरोजना के बड़े भाई गज्जला गंगाराम रीजनल इंजिनीयरिंग महाविद्यालय, वारंगल से इंजिनीयरिंग की पढ़ाई के बाद क्रांतिकारी आन्दोलन का हिस्सा बने थे और 1981 में एक मिलिटरी कैंप में ग्रेनेड टेस्टिंग के दौरान दुर्घटनावश उसके विस्फोट हो जाने से शहीद हुए थे।

सिंगरेणी कोयला खदानों के क्रांतिकारी मजदूर आन्दोलनों के प्रभाव एवं क्रांतिकारी माहौल वाले परिवार होने के चलते कामरेड गज्जला सरोजना स्वाभाविक रूप से तत्कालीन भाकपा (मा-ले) (पीपुल्सवार) में भर्ती हुई थीं। 8 वें दशक की शुरूआत में अपनी भर्ती के बाद वो आदिलाबाद जिले में छात्र कार्यकर्ता के रूप में काम करती रही। कुछ साल छात्र संगठक की जिम्मेदारी निभाने के बाद उन्हें अपने जिले के बाहर तकनीकी काम में भेजा गया था। उसके बाद कुछ साल वे आदिलाबाद के हथियार बंद दस्तों में काम करती रही। उसके बाद से लेकर अपने निधन तक के उनका पूरा क्रांतिकारी जीवन दण्डकारण्य में ही गुजरा। अपने जीवन

विशेष सूचना : यह जुलाई-दिसंबर, 2013 प्रभात का परिशिष्ट है। चूंकि प्रभात के जुलाई-दिसंबर, 2013 का अंक काफी देर से प्रकाशित हुआ है इसलिए उसमें शहीद साथियों की जीवनियों को प्रकाशित नहीं कर पाये। इसी कारण शहीदों की जीवनियों को प्रभात के इस परिशिष्ट के रूप में अलग से प्रकाशित किया गया है।

– संपादक मंडल

के अधिकांश समय उन्होंने पीड़ित आदिवासियों की सेवा में खासकर उन्हें साक्षर बनाने एवं उन्हें मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद से लैस करने में लगाया। केंद्रीय कमेटी सदस्य कामरेड श्याम जिनकी 2 दिसंबर, 1999 को फर्जी मुठभेड़ में दो अन्य सीसीएम कामरेड महेश एवं कामरेड मुरली के साथ हत्या की गयी थी, के साथ कामरेड सरोजना की शादी हुई थी। 1986 में कामरेड श्याम के साथ वो भी गिरफ्तार हो गयी। तीन साल तक जेल में रहने के बावजूद वो हताश नहीं हुईं। जेल में रहते हुए उनका हौसला और बुलंद हुआ। जेल से छूटते ही वो वापस क्रांतिकारी आन्दोलन में नये जोश और उत्साह के साथ शामिल हो गयी। कामरेड श्याम की शहादत पार्टी के लिए अपूरणीय क्षति है तो व्यक्तिगत रूप से कामरेड सरोजना के लिए बहुत बड़ा झटका एवं असहनीय थी। फिर भी वो उस सदमे से बाहर आयीं और क्रांतिकारी आन्दोलन को अपनी सेवाएं देती रही। उत्तर तेलंगाना एसजेडसी स्टाफ के रूप में उन्होंने प्रेस में काम किया था। राजनीतिक शिक्षिका के रूप में भी उन्होंने अपनी सेवाएं दी। बाद में कुछ समय के लिए सीसी स्टाफ के रूप में भी उन्होंने काम किया। 2006 से वो माड़ डिविजन का हिस्सा बनी जहां उन्होंने क्रांतिकारी जनताना सरकार की स्कूल में अध्यापिका का काम संभाली थीं। आदिवासी बालक– बालिकाओं को पढ़ाने–लिखाने से लेकर नाच–गाना सिखाती थी। बच्चों और जूनियर कैडरों के साथ उनका व्यवहार इस कदर आत्मीय व प्यार भरा हुआ करता था कि वे उन्हें प्यार से काको (नानी) करके पुकारते थे। उनकी जीवनशैली एकदम निराडंबर एवं सामान्य थी। ऑपरेशन ग्रीनहंट के तहत माड़ पर फासीवादी हमले जारी हैं। इन हमलों का एक मुख्य निशाना जनताना सरकारों के द्वारा संचालित प्राथमिक शालाएं एवं आश्रम भी हैं। कई शालाओं को सरकारी सशस्त्र बलों ने ध्वस्थ किया भी है। ऐसी कठिन परिस्थितियों में कामरेड सरोजना हिम्मत न हारते हुए बच्चों का मनोबल बढ़ाती हुई अध्यापन कार्य को जारी रखी थी। राजनीतिक शिक्षिका के रूप में वो पार्टी सदस्यों को राजनीति पढ़ाती रही।

अपने लंबे राजनीतिक जीवन में कामरेड सरोजना कभी पीछे मुड़कर नहीं देखी। क्रांतिकारी आन्दोलन के कई उतार–चढ़ावों में, व्यक्तिगत, स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों व कठिनाइयों के दौर में भी वो चट्टान की तरह मजबूती से डटी रही। जिस नवजनवादी क्रांति का सपना संजोयी वो पार्टी में भर्ती हुई थीं, उसे साकार करने के क्रांतिकारी व्यवहार में वो आखिरी सांस तक लगी रही। अपने प्रिय जीवन साथी कामरेड श्याम की शहादत के बाद लिखी एक स्मृति लेख में कामरेड सरोजना ने यह लिखा कि क्रांतिकारी आन्दोलन में जनता की सेवा करते हुए जान कुरबान करना ही कामरेड श्याम को दी जाने वाली सही श्रद्धांजलि होगी। उन्होंने अपना वचन पूरा किया।

कामरेड सरोजना 50 पार की उम्र में भी समिष्ठि कार्यों में शामिल होती थीं। गंभीर अस्वस्थता के बावजूद अपना काम स्वयं करती थीं। उन्होंने कई स्फूर्तिदायक कविताएं व गानें लिखीं। कई कामरेडों को संबोधित करते हुए प्रेरणादायक चिट्टियां लिखीं। क्रांतिकारी स्फूर्ति के साथ वो अपनी बीमारियों से लड़ती रही। आखिरी दिनों में वो केंसर बीमारी से जूझ रही थीं। क्रांतिकारी आन्दोलन पर जारी पाशविक दमन के चलते खतरों के बीच में उनका इलाज चलता रहा। इलाज पूरा होने के पहले ही दुश्मन को भनक लग गयी थी। खतरे को भांपकर क्रांति समर्थकों ने कामरेड सरोजना को पुलिस के जाल में फंसने से बचा लिया था और उन्हें दण्डकारण्य के अपने कामरेडों के बीच में पहुंचाया। उदर संबंधी इनफेक्शनों की वजह से उन्हें काफी तकलीफ हुई थी। यह जानकर कि आखिरी वक्त आ गया है, कामरेड सरोजना ने पास के सभी कामरेडों को लाल सलाम किया। वो जिन कामरेडों को जानती थी, जिनके साथ उन्होंने काम किया, ऐसे तमाम कामरेडों को प्रत्येक के नाम लाल सलाम बताने बोली।

एक अच्छे क्रांतिकारी के रूप में आखिरी वक्त तक जनता की सेवा करने, पार्टी के द्वारा सौंपे गये हर कार्य को तहे दिल से, अपनी पूरी क्षमता को इस्तेमाल करते हुए अंजाम देने, पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए जान कुरबान करने, कभी दुश्मन के सामने सिर न झुकाने की सीख देते हुए कामरेड सरोजना ने पास के सभी कामरेडों से विदा ली। क्रांति के प्रति निस्वार्थ व समर्पण की भावना से काम करने से संबंधित कामरेड सरोजना का आखिरी संदेश नव जवान क्रांतिकारियों को सदा प्रेरित करता रहेगा। ★

मानपुर माटी का लाल और शोषित जनता का लाड़ला
शहीद कामरेड उधमसिंह (जंगलू तुलावी) को लाल–लाल सलाम!

8 जून 2013 की सुबह राजनांदगांव जिले के मानपुर तहसील, बूकमरका के जंगलों में जिला पुलिस बलों और आईटीबीपी के सैकड़ों बलों ने मुखबिरों से मिली पक्की सूचना के आधार पर मोहला एलओएस पर एक सुनियोजित हमला किया। इस घातक हमले का मुकाबला करते हुए पार्टी के मोहला एरिया कमेटी सचिव और दल कमाण्डर कामरेड उधमसिंह शहीद हो गए। उस समय दल खेतों में मौजूद एक छोटी सी झोंपड़ी में अस्थाई रूप से ठहरा हुआ था। पुलिस ने उसका घेराव कर अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी जिसमें कामरेड उधमसिंह का शरीर छलनी हो गया। बाकी सदस्य इस हमले से बाल–बाल बच गए।

28 वर्षीय कामरेड उधमसिंह का जन्म मानपुर तहसील के उचापुर में हुआ था। घर पर उनका नाम जंगलू था। मां गंगाय बाई और पिता हाजमन तुलावी के वो मंझले बेटे थे। उनकी पढ़ाई कोराचा गांव में 8वीं तक हुई थी। गरीबी ने उन्हें उससे आगे पढ़ने का मौका नहीं दिया। 1990 के दशक की शुरूआत से इस क्षेत्र में गढ़चिरोली डिवीजनल कमेटी के नेतृत्व में क्रांतिकारी गतिविधियां शुरू हुईं। उस समय वह बहुत छोटे थे। क्रांतिकारी राजनीति से प्रभावित होकर कामरेड जंगलू ने 2002 में भर्ती हुए थे। उन्होंने अपना नाम 'उधमसिंह' बदल लिया।

पहले उन्होंने गढ़चिरोली के टिपरागढ़ इलाके में दस्ता सदस्य के रूप में काम किया था। 2003 में उन्हें पार्टी सदस्यता मिली थी। 2004 के आखिर में पार्टी ने दण्डकारण्य आंदोलन का नए इलाकों में विस्तार करने का फैसला लिया। उसके तहत मानपुर क्षेत्र में 23 सदस्यों का एक विशेष दस्ता भेजा गया था। उनमें कामरेड उधमसिंह भी शामिल थे क्योंकि वो खुद भी उसी इलाके से थे। कामरेड उधम को पहले कोड़ेकुर्से एलओएस में सदस्य बनाया गया था। कुछ समय तक उन्हें छात्र संगठन की जिम्मेदारी भी दी गई थी। उन्होंने जनता के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित किए थे और सांगठनिक कामकाज में अनुभव हासिल किया। इसे देखते हुए डिवीजनल कमेटी ने 2009 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्य के रूप में पदोन्नति देकर मोहला एरिया में स्थानांतरित किया। उनका गांव उचापुर भी मोहला एरिया में आता है। इस तरह उन्होंने अपने ही इलाके में नेता बनकर गए।

मोहला इलाके में कामरेड उधमसिंह ने उल्लेखनीय काम किया। पहले उन्हें दस्ते के उप कमाण्डर की जिम्मेदारी दी गई थी। 2010 में उन्हें कमाण्डर बनाया गया और 2011 में एरिया कमेटी सचिव के रूप में चुन लिया गया। उन्होंने मोहला और चौकी क्षेत्रों के विभिन्न गांवों में पार्टी कामकाज का विस्तार किया। नए गांवों में भी जाकर परिचय बनाते हुए संघर्ष का विस्तार करने में कामरेड उधम की भूमिका अहम थी। उन्हें जनता का अपार प्यार मिला। हर साल तेंदुपत्ता संघर्ष चलाकर मजदूरी दर बढ़ाने में, गांवों में जनता के बीच उत्पन्न विभिन्न अंतरविरोधों का निपटारा करने में, 2009 में इलाके में सूखा पड़ने से उसके समाधान के लिए क्षेत्र के व्यापारियों से चंदा वसूलकर लोगों को चावल बांटने में, इस तरह कई जन संघर्ष व जन कल्याण के क्रियाकलापों में उनका योगदान रहा।

जनता के साथ कामरेड उधम का व्यवहार विनम्र और सम्मानपूर्वक हुआ करता था। वो मिलनसार थे। कम बोलने वाले और शर्मीले स्वभाव के कामरेड उधम दृढ़ संकल्प और पहलकदमी के लिए जाने जाते थे। वह एक निर्भीक शख़्स थे जिन्होंने मुश्किल हालात के अंदर भी कभी अपना संयम नहीं खोया। राजनीतिक, सांगठनिक और फौजी मामलों में उनका बराबर योगदान रहा। वह हमेशा एक विनम्र छात्र बने रहे। सीखने के लिए सदा तत्पर रहा करते थे।

2009 के मध्य से केन्द्र व राज्य सरकारों ने क्रांतिकारी आंदोलन का सफाया करने के लक्ष्य से 'आपरेशन ग्रीनहंट' के नाम से देशव्यापी आक्रमण शुरू कर दिया। इसके पहले चरण के अंतर्गत राजनांदगांव और कांकेर जिलों के सीमावर्ती क्षेत्र में कार्पेट सेक्यूरिटी लगा दी गई। हजारों पुलिस व अर्ध–सैनिक बलों ने गांवों पर हमले तेज किए। सैकड़ों जन संगठन कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर उनमें से कइयों को जबरन एसपीओ बनाया गया।

इस श्वेत आतंक के बीचोंबीच भी कामरेड उधम एक चट्टान की तरह खड़े रहे। कई बार खाना तक नहीं

मिलता था फिर भी उनके इरादे कभी कमजोर नहीं हुए थे। बेहद कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए उन्होंने अपने दस्ते का सकुशल नेतृत्व किया। जनता का हिम्मत बढ़ाते हुए धीरे–धीरे काम को आगे बढ़ाया। कई मुखबिरों को समझा–बुझाकर तटस्थ बनाते हुए और कुछ कट्टरों का सफाया करते हुए जनता का मनोबल बढ़ाने उन्होंने पूरा जोर लगाया। इन तमाम प्रयासों के फलस्वरूप जनता में विश्वास फिर से जाग उठा।

फौजी कार्रवाइयों में भी कामरेड उधम का महत्वपूर्ण योगदान रहा। 2008 में तोलुम के पास किए गए ऐम्बुश में तथा 12 जुलाई 2009 को मदनवेड़ा के पास किए गए ऐतिहासिक हमले में, जिसमें एसपी वी.के. चौबे समेत 29 पुलिस वालों का सफाया किया गया था, कामरेड उधम ने भाग लिया था। इसके अलावा भी कई अन्य फौजी कार्रवाइयों और मुठभेड़ों में वो शामिल थे।

सैद्धांतिक और वैचारिक मामलों में कामरेड उधमसिंह अपनी समझदारी बढ़ाने की लगातार कोशिश करते रहे। पार्टी के अंदर उत्पन्न गलत रुझानों के खिलाफ लड़ने में और साथियों की आलोचना करने में कामरेड उधम आगे रहे।

जुलाई 2009 में कामरेड उधमसिंह का विवाह अपनी एक साथी कामरेड से हुआ था।

कामरेड उधम को मानसिक रूप से कमजोर करने के लिए दुश्मन ने कई चालें चलीं। चूंकि कामरेड उधम के एक मामा भी क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय हैं इसलिए इन दोनों के परिजनों को निशाना बनाकर कई बार उनकी गिरफ्तारी की। दोनों साथियों के पिता, भाई, चाचा आदि कई सदस्यों को पकड़कर बुरी यातनाएं देकर फर्जी केसों में फंसाकर जेल भेज दिया। यहां तक कि दोनों परिवारों का 'गांव बहिष्कार' भी कर दिया। पुलिस का हुक्म था कि गांव का कोई भी आदमी उनके घरों में नहीं जाएगा। उनके खेतों में काम नहीं करेगा। पुरुष सदस्यों के जेल जाने और गांव बहिष्कार के चलते उनकी खेती–किसानी चौपट हो गई। खाने के लाले पड़ने लगे थे। इसके बावजूद कामरेड उधम अडिग रहे। अपने माता–पिता को दुश्मन के नीचतापूर्ण हथकण्डों से अवगत कराते हुए अपने मन में उसके प्रति और घृणा बढ़ाते रहे। उनके परिवार ने भी, खासकर उनकी मां ने कामरेड उधम का हौसला हमेशा बुलंद रखा। वो अपने बेटे से हमेशा यही कहा करती थीं कि "बेटा, जिस लक्ष्य के लिए तुमने घर छोड़ा उससे कभी मुकर न जाना और कभी पीछे मुड़कर न देखना"। पुलिसिया दमन को झेलते हुए भी वो अपने बेटे के काम पर हमेशा गर्व महसूस करती रहीं।

2009 से बढ़े हुए शत्रु दमन की पृष्ठभूमि में कुछ लोग पार्टी छोड़कर चले गए थे। मोहला–मानपुर क्षेत्र से राजेश, सोमजी, फूलो, चांदनी, प्रदीप, छोटू, बादल, जंगू, साकेत जैसे कुछ व्यक्तियों ने पार्टी और जनता को धोखा देकर दुश्मन के सामने आत्मसमर्पण कर दिया। इनमें अधिकांश लोग अब पुलिस के साथ रहते हुए प्रति–क्रांतिकारियों के रूप में काम कर रहे हैं। गांवों पर हमले करवाने में तथा कई लोगों को गिरफ्तार करवाने में इन गद्दारों की मुख्य भूमिका है। इस माहौल में कई गांवों में जनता उधम से पूछा करती थी कि क्या एक दिन वो भी पार्टी छोड़कर सरेंडर कर देगा? उसके जवाब में उधम यह कहता था – "जब तक जिंदा रहूंगा, संघर्ष नहीं छोड़ूंगा। अपनी जान दूंगा लेकिन जनता को धोखा कभी नहीं"। उन्होंने अपना वचन निभाया। जनता की मुक्ति के लिए मुस्कराते हुए अपनी जान कुरबान कर दी। गोलियों से शरीर लहूलुहान हो गया। लेकिन उनकी आंखों में आशा, विश्वास और वफादारी का दीप आखिर तक प्रज्ज्वलित रहा। आखिर तक उनकी उंगली रायफल के ट्रिगर पर कसी रही। दुश्मन ने उधम का सिर्फ भौतिक रूप से ही अंत किया लेकिन उनके ऊंचे आदर्शों और उनके द्वारा स्थापित उच्च मूल्यों को खत्म करना उसके बस की बात नहीं।

दक्षिन बस्तर डिविजन

कॉमरेड कुर्सम बोज्जाल

दक्षिण बस्तर डिविजन के जेगुरगुण्डा एलजीएस कमांडर कामरेड कुर्सम बोज्जाल की 18 अगस्त, 2013 को सांप डंसने से शहादत हुई।

कॉमरेड बोज्जाल का जन्म दक्षिण बस्तर डिविजन बीजापुर जिले के जेगुरगुण्डा एरिया के पेगडपल्ली गांव में 28 जुलाई, 1988 को हुआ था। बचपन से ही एक तरफ कृषि कार्यों में मां–बाप का हाथ बंटाते थे तो दूसरी ओर बाल संगठन में काम करते थे। 2004 के बीच में वह मिलिशिया प्लाटून में शामिल हो गये थे। मिलिशिया में रहते हुए वो सलवा जुडूम का मुकाबला करने कई कार्रवाइयों में भाग लिये थे। 2006 में वे पीएलजीए में भर्ती होकर क्रांतिकारी आन्दोलन का हिस्सा बन गये थे। 2007 में उन्हें पार्टी सदस्यता मिल गयी थी। उसी साल तबादला होकर प्लाटून–10 में शामिल हो गये थे और वहां सेक्शन डिप्टी कमांडर की जिम्मेदारी ले ली। कुछ महीने के लिए एरिया मिलिशिया कमांडर–इन–चीफ की जिम्मेदारी भी निभाई। प्राथमिक पढ़ाई, राजनीतिक व सैनिक विषयों को बहुत ध्यान देकर

सीखते थे। बोज्जाल में मौजूद इन सकारात्मक पहलुओं को ध्यान में रखकर डीवीसी ने उन्हें 2008 में एसी सदस्य की पदोन्नति देकर जेगुरगुण्डा एलजीएस कमांडर के रूप में नियुक्त किया। एलजीएस कमांडर के रूप में अपनी जिम्मेदारियों को निभाने वह हमेशा जिद के साथ कोशिश करते थे। वह एनएमडीसी, असिरगुडा, मिनपा, मुकरम, पामेड, उसूर, किष्टारम आदि छोटी, मध्यम एवं बड़ी सैनिक कार्रवाइयों में शामिल थे। 10 दिसंबर, 2012 को एक घंटे तक दौड़कर किष्टारम गांव के समीप कोबरा जवानों पर पहला कारतूस फायर करके बोज्जाल ने उन्हें घायल करने में सक्रिय भूमिका निभाई। सैनिक मामलों में स्वयं विकसित होते हुए अपने दल सदस्यों को विकसित करने के लिए लगातार प्रयास करते थे। कॉमरेड बोज्जाल के विकास की ढेरों संभावनाएं थीं। लेकिन रात में सोये हुए हालत में इस कॉमरेड को सांप ने डंस लिया था। उन्हें बचाने के साथी कॉमरेडों के सारे प्रयास विफल हुए और उन्होंने शहादत को पाया।

कॉमरेड बोज्जाल के आदर्शों को ऊंचा उठायेंगे। उसके अधूरे आशयों को पूरा करने हर संभव कोशिश करेंगे।

कामरेड हपका शांति

दक्षिण बस्तर डिविजन के पामेड़ व जेगुरगुण्डा एरिया में सितंबर, 2013 में सैकड़ों की संख्या में दुश्मन के सशस्त्र बलों ने एरिया डॉमिनेशन चलाया था। इसे विफल करने पीएलजीए के द्वारा किये गये जवाबी हमले में पीएल–9 की सदस्या कॉमरेड हपका शांति वीरगति को प्राप्त हुईं।

कॉमरेड शांति का जन्म पश्चिम बस्तर डिविजन के बीजापुर जिले के गंगालूर एरिया के पदेड़ा गांव में हुआ था। वह अपने पीछे एक छोटे भाई, एक छोटी बहन को छोड़ गयी। घर की बड़ी बेटी होने के नाते बचपन से ही घर के अंदर और बाहर सभी कार्यों में मां बाप का हाथ बंटाती थी। क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रभाव वाला गांव होने के कारण वह गांव के बाल संगठन में शामिल हुई थीं।

2005 में उस इलाके में सलवा जुडूम दमन शुरू हुआ था। जनजीवन अस्तव्यस्त हो गया था। अपनी जिंदगियों में अपेक्षाकृत शांति कायम करने के लिए सलवा जुडूम का प्रतिरोध करने के सिवाय कोई दूसरा चारा नहीं बचा था। कॉमरेड शांति ने भी इसी रास्ते को अपनाया और मिलिशिया में शामिल होकर दुश्मन के हमलों से अपने गांव की रक्षा करने कमर कस ली। कुछ ही समय बाद 2005 की आखिरी में वह पूर्णकालिक कार्यकर्ता की हैसियत से क्रांतिकारी आन्दोलन का हिस्सा बन गयी थीं। आन्दोलन की जरूरतों को पहली प्राथमिकता देते हुए जनवरी, 2006 में दक्षिण बस्तर के जेगुरगुण्डा एरिया के बासागुडा एलओएस सदस्या बनी। 2007 में वहीं एरिया केएएमएस की जिम्मेदारी लेकर महिलाओं को संगठित करने की कोशिश की। वह हमेशा मुस्कराती हुई अपनी जिम्मेदारी निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ती थीं। वह जितनी राजनीति जानती थी, साथी कामरेडों व जनता को बताती। अनजान विषयों को जानने पर ध्यान देती थीं।

2008 में डिविसी सदस्या की गार्ड की जिम्मेदारी लेकर तीन साल तक काम करती रही। बाद में उनका प्लाटून–9 में तबादला हो गया था। सितंबर, 2013 में इलाके में दुश्मन के ऑपरेशन का मुकाबला करने के लिए पीएलजीए ने जो एंबुश किया था, उसमें कां. शांति भी शामिल हुईं। इस दौरान दुश्मन बलों के द्वारा की गयी अंधाधुंध शेल्लिंग में कां. शांति गंभीर रूप से घायल हुई थीं। बाद में साथी कामरेडों के समक्ष ही उन्होंने आखिरी सांस ली। उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए अपनी जान न्योछावार करने वाली कामरेड शांति के अंतिम संस्कार में आस–पास की जनता ने बड़ी संख्या में शामिल होकर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। कां. शांति के अधूरे आशय की पूर्ति के लिए आखिरी सांस तक संघर्ष करने का पीएलजीए कामरेडों एवं जनता ने संकल्प लिया।

कॉमरेड हपका शांति अमर रहे।

कॉमरेड मुचाकी पायके

21 जुलाई, 2013 को दक्षिण बस्तर डिविजन के कोण्टा एरिया के बोट्टेम गांव के समीप दुश्मन के साथ हुई जबर्दस्त मुठभेड़ में वीरोचित ढंग से लड़ती हुई कां. पायके शहीद हुईं।

दक्षिण बस्तर डिविजन, सुकमा जिले के कोण्टा तहसिल के कन्नायगुडा गांव में कां. पायके ने जन्म लिया। शहादत के वक्त उनकी उम्र सिर्फ 22 वर्ष थी। अपने गांव में ही सीएनएम में कुछ समय तक काम करने के बाद वह 2011 में पीएलजीए में भर्ती हुई थीं। प्लाटून–4 की सदस्या बनकर वह छोटे एवं मध्यम किस्म की सैनिक कार्रवाइयों में शामिल हुईं। हर कार्रवाई में उसने अपने हथियार के साथ हिम्मत से लड़ी। कॉमरेड पायके के आदर्श को ऊंचा उठायेंगे।

कामरेड ककेम मुन्नी अमर रहे

अक्टूबर 2, 2012 को बीजापुर जिले के उसूर ब्लाक के बासागुड़ा एरिया में स्थित गांव कोरसागुड़ा में हुई पुलिस फाइरिंग में कॉमरेड ककेम मुन्नी शहीद हुईं। 1994 में कोरसागुड़ा में कॉमरेड ककेम मुन्नी का जन्म हुआ था। वह ककेम जिम्मे–आयतू दंपत्ति की दूसरी संतान थीं। गरीब परिवार में जन्मी कामरेड मुन्नी बचपन से ही वर्ग संघर्ष को देखी। गांव में गठित बाल संगठन में भर्ती होकर उन्होंने

काम किया। 22 फरवरी, 2002 को कोरसागुड़ा गांव पर सलवा जुडूम के गुण्डों ने हमला किया था। जनता की संपत्ति को नष्ट किया था। घरों को जलाया था। सलवा जुडूम के हमलों से गांव की रक्षा करने गठित मिलिशिया पीएल में कामरेड मुन्नी 2006 में भर्ती हुई थीं। 2012 तक मिलिशिया में रहकर वह डॉक्टर की जिम्मेदारी निभाई। मिलिशिया के तमाम हमलों में शामिल रही। मिलिशिया में काम करते हुए ही वह 2009 में पार्टी में भर्ती हुई थीं। लेकिन आंखों की रोशनी के कमजोर होने के कारण वह घर में रहकर मिलिशिया में काम करने की बात कहकर वापस गयी थीं। मिलिशिया में रहकर वह गांव के वर्ग संघर्ष सहित गांवों पर हमलों के लिए आने वाली फोर्स पर मिलिशिया के हमलों में भाग ली थीं। मिलिशिया में अनुशासन के साथ रहते हुए उन्होंने पढ़ना–लिखना भी सीखा। दुबली–पतली कामरेड मुन्नी संतरी, किचन व सामान ढुलाई में आगे रहती थीं। दो अक्टूबर, 2012 को सारकेनगुड़ा कैंप से पुलिस दो बैचों में कोरसागुड़ा के लिए निकली थी। एक बैच पहाड़ पर गुपचुप से थी। दूसरी बैच ने गांव पर हमला किया था। पुलिस की खबर पाकर मिलिशिया प्रतिरोध करने आगे बढ़ी। इस बीच में पहाड़ पर छिप कर बैठी पुलिस बैच ने मिलिशिया को घेरकर अंधाधुंध फायरिंग की थी। इसी फायरिंग में कामरेड मुन्नी शहीद हो गयीं। लाश को दुश्मन बासागुड़ा ले गया था। तब गांव की जनता एकत्रित होकर लाश लाने बासागुड़ा थाना गये थे। पुलिस ने लाश मांगने गये लोगों की पिटाई की थी। इसके बावजूद जनता हिम्मत के साथ डटी रही। अंततः पुलिस को लाश देनी पड़ी। कामरेड मुन्नी की लाश को गांव में लाकर जनता ने आदिवासी रीति–रिवाज में अंतिम विदाई दी।

कॉमरेड मड़काम कुम्माल

जून 27, 2012 को कॉ. कुम्माल छापामार आधार इलाके में घुसने वाले दुश्मन को धक्का देने बूबी ट्रैप लगाते समय दुर्घटनावश उसके विस्फोट होने से शहीद हुए थे। श्हादत के समय कुम्माल की उम्र 23 वर्ष थी। वे अपने पीछे 4 छोटी बहनों को छोड़ गये। जेगुरगुण्डा स्कूल में कुम्माल चौथी कक्षा तक पढ़े थे।

दक्षिण बस्तर डिविजन, सुकमा जिला के कोण्टा तहसील के चिंतलनार थाना के अंतर्गत पुलनपल्ली गांव के मड़काम देवाल एवं बुधरी की पहली संतान के रूप में मड़काम कुम्माल उर्फ चंदू का जन्म हुआ। बचपन में कुम्माल ने बाल संगठन में काम किया था। बचपन से ही वे होशियार थे। गांव में दल के पहुंचने की खबर सुनते ही वे दल के पास पहुंच जाते थे। और खाने–पीने की सामग्री लाने में शामिल होते थे। 2003 में वे डीएकेएमएस में शामिल हो गये थे। 2006 में मिलिशिया प्लाटून में भर्ती हुए थे। तब से लेकर शहादत तक 6 साल मिलिशिया में रहकर उन्होंने जनयुद्ध में अपना योगदान दिया।

मिलिशिया में रहते हुए वे सैनिक गतिविधियों में बहादूरी से शामिल होते थे। सौंपे गये हर कार्य को दृढ़तापूर्वक पूरा करते थे। 2008 में मिलिशिया पीएल का सेक्शन कमांडर बन गये थे। 2010 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गयी थी। बाद में वह मिलिशिया पीएल का डिप्टी कमांडर बन गये। साथ ही डॉक्टर की जिम्मेदारी भी निभाते थे। बीमार साथियों का वह बहुत ख्याल रखते थे। मिलिशिया सदस्यों व जनता के साथ घुलमिलकर रहते थे और विनयपूर्ण व्यवहार करते थे।

चिंतलनार पहुंची पुलिस आस–पास में गश्त कर रही थी तभी कॉमरेड कुम्माल अपने पीएल के साथियों के साथ दुश्मन पर एंगेज हुए थे। दुश्मन को फंसाने रास्ते में बूबी ट्रैप लगाकर कनेक्शन देते समय दुर्घटनावश वह विस्फोट हो गया था। विस्फोट की जद में आकर कॉमरेड कुम्माल गंभीर रूप से घायल होकर 7 घंटे बाद शहीद हो गये थे। कॉमरेड मड़काम कुम्माल उर्फ चंदू की हिम्मत, पहलकदमी पूरी मिलिशिया के लिए आदर्श है। कॉमरेड कुम्माल की लाश को गांव में ले जाकर क्रांतिकारी रीति–रिवाज के साथ–साथ आदिवासी सामाजिक परंपरा के अनुसार उनका अंतिम संस्कार किया गया था। 700 लोगों ने उन्हें आखिरी विदाई दी और उनके सपने को पूरा करने का संकल्प लिया।

कामरेड सोढ़ी दूलाल

दक्षिण बस्तर डिविजन, सुकमा जिले के कोण्टा तहसिल के बासागुडा एलओएस इलाके के जोन्नागुडा गांव के मध्य वर्गीय परिवार में 25 साल पहले कामरेड सोढ़ी दूलाल का जन्म हुआ था। वे बचपन से ही मेहनती थे। परिवार वालों की खेती बाड़ी के काम में काफी मदद करते थे। बचपन में बाल संगठन में शामिल हुए थे। बाद में डीएकेएमएस का सदस्य बनकर काम किया। वह सांस्कृतिक रुचि भी रखते थे और तीज त्यौहार, मेला–मंडई में क्रांतिकारी गीत गाते थे। वे शादी शुदा थे और एक बेटी का बाप भी। डीएकेएमएस में काम करते हुए उन्होंने जन समस्याओं को लेकर जन आन्दोलनों का नेतृत्व किया था। इन पहलुओं को देखकर उन्हें जोन्नागुडा ग्राम रक्षा दल के कमांडर की जिम्मेदारी दी गयी थी। जीआरडी कमांडर के रूप में वे गांव की रक्षा करने में हमेशा आगे रहते थे।

गांव में क्रांतिकारी कार्यक्रम के आयोजन के समय, जनता के कृषि कार्यों में व्यस्त रहते समय वह जनता के जान–माल की रक्षा के लिए दुश्मन के खिलाफ एंबुश लगाये बैठते थे। क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रति उनकी

प्रतिबद्धता एवं उनके कामकाज को देखकर उन्हें 2003 में पार्टी सदस्यता दी गयी थी। 29 जून, 2012 को दुश्मन जेगुरगुण्डा एरिया पर हमला करने के उद्देश्य से तीनों ओर से तीन बैचों में अंदर घुस गया था। कामरेड दूलाल दुश्मन की जानकारी मिलते ही अपनी मिलिशिया टीम को लेकर चिंतलनार से आने वाले दुश्मन पर एंगेज हुए थे। 29 तारीख की सुबह दुश्मन के साथ हुई मुठभेड़ में कामरेड दूलाल अपनी रायफल से दुश्मन पर जबर्दस्त फायरिंग की थी। कव्हार्स लेने, बाद में रिट्रीट का काशन देते हुए मिलिशिया को सुरक्षित वहां से निकाले थे। दुश्मन के खिलाफ लड़ते हुए उन्होंने अपनी जान दे दी। अपने लाड़ले की लाश के लिए गांव की जनता ने जेगुरगुण्डा थाने जाकर 3–4 दिन तक आन्दोलन किया था लेकिन लाश नहीं मिल सकी। उनके अधुरे सपनों को साकार करेंगे।

कॉमरेड मड़काम लच्छाल

जून 29, 2012 को तीन जिलों की फोर्स ने संयुक्त रूप से अभियान चलाते हुए जेगुरगुण्डा एरिया पर हमला किया था। चितंलनार से आयी पुलिस बैच ने अपनी जमीन पर काम करते ग्रामीण कॉमरेड लच्छाल की फर्जी मुठभेड़ में हत्या की।

कॉमरेड लच्छाल पेन्टा गांव में दोरला परिवार के एक साधारण आदिवासी किसान परिवार में पैदा हुए थे। पुराने गांव, चिभुरभट्टी में भूमिहीन परिवार होने के नाते उनका परिवार आजीविका के लिए चेरला में जाकर बस गया था। लच्छाल का बड़ा भाई सरपंच बनके पार्टी, क्रांतिकारी आन्दोलन एवं जनता के विरोध में खड़ा हो गया था। जब जन अदालत में उसे मौत की सजा सुनायी गयी तब लच्छाल ने उसका न केवल समर्थन किया था बल्कि जनता व क्रांतिकारी आन्दोलन के पक्ष में रहने के अपने इरादे को मजबूती से पेश किया था। अपने भाई के मुखबिर बनने का कड़ा विरोध किया था। बाद में वे आखिरी दम तक हर सुखदुख में गांव की जनता के साथ में ही रहे। सलवा जुडूम दमन के दौरान कॉमरेड लच्छाल की संपत्ति भी नष्ट की गयी थी, घर भी जला दिया गया था। वह जंगल में झोंपड़ी बनाकर गुजर बसर कर रहे थे। कॉमरेड लच्छाल आखिरी सांस तक गांव की क्रांतिकारी जनता का हिस्सा बनकर जिये।

माड़–उत्तर बस्तर संयुक्त डिविजन

कॉमरेड रामलाल (हीरासिंह)

कॉमरेड रामलाल (हीरासिंह उइका) माड़–उत्तर बस्तर संयुक्त डिविजन के प्रतापुर एरिया के मेंड्रा गांव में एक गरीब परिवार में पैदा हुए थे। पांच भाई–बहनों में रामलाल दूसरे नंबर के थे। रामलाल के मां–बाप ने उन्हें गांव की प्राथमिक शाला में भर्ती कराया था। उन्होंने पांचवीं कक्षा तक पढ़ाई की। 12 साल की उम्र में वे बाल संगठन का सदस्य बन गये थे। दो साल तक आदिवासी बाल संगठन के अध्यक्ष रहे। क्रांतिकारी दिवसों व विरोध दिवसों के आयोजन में वे बढ़चढ़कर भाग लेते थे। गांव के सभी बच्चों को जमा करके वे जुलूस, सभाओं में शामिल करते थे। सीएनएम के गीत–नृत्य भी सीखे। 2004 में वे पार्टी में भर्ती हुए थे।

पार्टी जरूरतों को देखते हुए रामलाल का अक्टूबर में कंपनी–1 में तबादला किया गया था। कंपनी में उन्हें प्राथमिक पढ़ाई बताने गुरूजी की जिम्मेदारी दी गयी थी। इस जिम्मेदारी को उन्होंने बखूबी निभाया। कंपनी सदस्य के रूप में रामलाल कई सैनिक कार्रवाइयों में भाग लिये थे। 2005 में डौला रेड में शामिल होकर संतरी का काम करते हुए हमारे बलों की रक्षा की। 2005 के आखिरी चार महीने तक वे पश्चिम बस्तर डिविजन के नेशनल पार्क एरिया में जनता की सुरक्षा के कार्य में थे।

कामरेड रामलाल ने गंगोल के एसपीओ कैंप पर, एनएमडीसी रेड़, मुरकीनार रेड, कुदूर घाटी एंबुश, बट्टुम एंबुश में शामिल होकर हिम्मत व साहस का परिचय दिया था। वे 2009 में पार्टी के प्रस्ताव के मुताबिक विशेष काम पर मैनपुर गये थे और अपने कर्तव्य के निर्वहण के दौरान अप्रैल महीने में दुश्मन के हाथ लग गये थे। फर्जी केस में फर्जी गवाही के आधार पर उन्हे 5 साल की सजा सुनाई गयी थी। दुर्ग व जगदलपुर जेल में 4 साल तक रहे। इस दौरान जेल की अमानवीय परिस्थिति की वजह से वे काफी बीमार पड़ गये थे। जगदलपुर जेल अधिकारियों व डॉक्टरों की लापरवाही के चलते उनकी बीमारी जटिल हो गयी। उन्हें जेल के बाहर बड़े अस्पताल नहीं ले जाया गया। जगदलपुर जेल की महिला राजनीतिक बंदियों की भूख हड़ताल के बाद कॉमरेड रामलाल को जगदलपुर के जिला अस्पताल ले जाया गया। लेकिन तब तक काफी देर हो चुकी थी। अस्पताल में भर्ती करने के एक दिन बाद ही 17–18 जुलाई की दरमियानी रात कॉमरेड रामलाल ने अपनी आखिरी सांस ली। अस्पताल से जेल में लाश को मंगाकर, महिला राजनीतिक बंदियों ने कॉमरेड रामलाल को क्रांतिकारी परंपरा के अनुसार, 'कामरेड रामलाल अमर रहे', 'कॉमरेड रामलाल के अधूरे सपनों को साकार करेंगे' के नारों के साथ अंतिम विदाई दी थी।

जेल में रहते हुए भी कॉमरेड रामलाल ने संघर्ष का परचम लहराया था। जेल अधिकारियों के निरंकुश व्यवहार के खिलाफ, जेल बंदियों के अधिकारों के लिए दुर्ग जेल में हुई जेल बंदियों की भूख हड़ताल में कॉमरेड रामलाल ने सक्रिय भागीदारी निभाई थी। जेल की अमानवीय परिस्थितियों

पर उन्होंने कविता, पीटो लिखी। 'दुश्मन के चंगुल से जब भी छूटूंगा, फिर से क्रांतिकारी आन्दोलन में सक्रिय हो जाऊंगा'– हमेशा यही कहता था और बाहर संदेश भेजा करता था।

कॉमरेड रामलाल की असामयिक मौत के लिए यह लुटेरी सरकार और उसके राज्य यंत्र के हिस्से के रूप में काम करने वाले जेल अधिकारी ही जिम्मेदार हैं। आज की जेलें–अदालतें उनकी हैं। कल की जन अदालत में उन्हें सजा देकर ही हम कॉमरेड रामलाल एवं उन जैसे कई शहीदों को सही श्रद्धांजलि दे सकते हैं। आखिरी सांस तक जनता व क्रांति के लिए सोचते हुए दुश्मन की मांद में भी सर्वहारा वर्गीय चेतना के साथ पार्टी परचम को लहराने वाले कॉमरेड रामलाल की जीवनी हमारे लिए एक आदर्श है।

कामरेड सरिता (वाचम चन्द्री)

जून 12, 2013 की सुबह 7.15 बजे मुखबिर की सूचना के आधार पर नारायणपुर से सैकड़ों सरकारी सशस्त्र बलों ने इरपानार–उलिसपारा गांव के जंगल में पीएलजीए की एक टुकड़ी को घेरकर हमला किया। उस हमले का पीएलजीए बल बहादुरी से मुकाबला करते हुए पीछे हटकर घायल साथी का इलाज कर रहे थे। दुश्मन ने उनका पीछा करके उन्हें घेरकर अंधाधुंध फायरिंग की जिसमें कॉमरेड सरिता बहादुरी के साथ लड़ते हुए शहीद हो गईं। दुश्मन ने योजनाबद्ध तरीके से हमारी पीएलजीए टुकड़ी को खत्म करने के इरादे से हमला किया था। हमारे बल दुशमन का मुंहतोड़ जवाब देते हुए घेरा तोड़कर बाहर निकलने में सफल हुए।

कॉमरेड सरिता का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन के नेशनलपार्क इलाके के डोक्के गांव में हुआ था। मां राजे वचामी और पिता गुड़सा वचामी ने अपनी लाडली बेटी का नाम चन्द्री रखा था। गरीब किसान परिवार में जन्मी कॉमरेड चन्द्री बचपन से ही बहुत मेहनती और होनहार थीं। कॉमरेड सरिता का गांव अभ्यारण्य इलाके के अन्दर आता है, जहां शासन–प्रशासन ने जानवरों को पालने के लिए गांवों को खाली करने का हुक्म दिया था। इन गांवों की जनता को विस्थापित करने के लिए सरकार और जंगलात विभाग ने इन गांवों को कई तरह के जुल्मों का शिकार बनाया था। तभी इस इलाके में हमारी पार्टी ने कदम रखा। जनता ने हमारी पार्टी के नेतृत्व में संगठित होकर वन विभाग वालों को इस इलाके से खदेड़ दिया। कॉमरेड सरिता बचपन से क्रांतिकारी माहौल में पली–बढ़ी थीं। होश संभालते ही वह चेतना नाट्य मंच की सदस्या बन गई। क्रांतिकारी गीतों के माध्यम से उन्होंने जनता में क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार किया। बाद में क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन में वह सक्रिय रूप से काम करने लगी।

क्रांतिकारी आन्दोलन में संगठित हो रही जनता को देख शोषक–शासक वर्गों और महेन्द्र कर्मा जैसे कुख्यात जमींदारों ने आन्दोलन को कुचलने के लिए जनजागरण, सलवा जुडूम, शांति यात्रा आदि नामों से दमन अभियानों को चलाया। इन दमन अभियानों और जुल्मों ने कॉमरेड सरिता के अंदर वर्ग घृणा को तीखा कर दिया। वह जन संगठन में सक्रिय रूप से काम करते हुए जनता को संगठित करती थीं। फासीवादी सलवा जुडूम भी सरिता के गांव से कुछ ही दूरी पर स्थित अम्बेली गांव से शुरू हुआ था। इनका गांव भी दिल दहला देने वाले जुल्मों का शिकार हुआ था। अम्बेली गांव में हमला करने के बाद डोक्के गांव पर हमला हुआ था। लोगों से मारपीट की गई और जनता को बंदी बनाकर राहत शिविरों में कैद कर दिया गया। कॉमरेड सरिता भी इन जुल्मों का शिकार हुई थीं। उसे भी बंदी बनाकर सलवा जुडूम के बंदी शिविर में रखकर प्रताड़ित किया गया था। वह वहां से मौका पाकर भाग आई और जन संगठनों और पार्टी के सम्पर्क में आयीं। कॉमरेड सरिता ने यह सोचकर कि हथियारबंद संघर्ष के बिना इस लुटेरी व्यवस्था को खत्म करना और इन जुल्मों को रोकना संभव नहीं है, 2006 में पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में पीएलजीए में भर्ती हो गईं। उनकी छोटी बहन कामरेड लक्ष्मी मार्च, 2007 में नेलमड़गु के पास हुई मुठभेड़ में शहीद हो गई। उसके बावजूद कॉमरेड सरिता ने दृढ़ता के साथ काम किया।

कुछ समय तक नेशनलपार्क इलाके में काम करने के बाद उसका 2007 में कम्पनी–1 में सदस्या के रूप में तबादला किया गया था। तब से 2012 तक वह कम्पनी–1 में, जून 2012 से अपनी शहादत तक बटालियन–2 की सदस्या के रूप में काम करती रही। कॉमरेड सरिता ने कई हमलों में भाग लिया और हिम्मत व दृढ़ता के साथ अपनी भूमिका निभाई। उन्होंने सीओबी, मानपुर डिविजन के मांदागिरी ऐम्बुश, नारायणपुर जिले के धौड़ाई थाना पर हमला, कोंगेरा ऐम्बुश जिसमें सीआरपीएफ के 27 जवानों को मारा गया था में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभाई। इसके अलावा ब्रेहेबेड़ा, उदनपुर, सुलंगी, कुकड़ाझोर आदि हमलों में भाग लिया।

कॉमरेड सरिता को घर में पढ़ने लिखने का मौका नहीं मिला। पार्टी में आने के बाद वह जल्दी ही पढ़ना–लिखना सीख गईं और डॉक्टर की जिम्मेदारी ले ली। वह बीमार साथियों का बहुत ख्याल रखती थीं। वह जिस भी गांव में जाती वहां की जनता का भी बड़े प्यार से इलाज करती थी। कॉमरेड सरिता मिलनसार और हंसमुख तथा मेहनती स्वभाव की कामरेड थीं। वो सबके साथ प्यार से रहती थीं। अनुशासन का कड़ाई से पालन करती थीं। कठिन युद्ध कला को सीखने के लिए सदा प्रयासरत रहती थीं। कमांडर के आदेशों का पालन करने में हमेशा तत्पर रहती थीं। कठिन गुरिल्ला जिन्दगी में कई घण्टों तक चलना, खुद का सामान ढोना और दूसरे अशक्त साथियों की भी मदद करने में वह हमेशा आगे रहती थीं। लेकिन कभी उनके चेहरे पर थकावट की शिकन को आने नहीं देती थी वह हर काम में सक्रिय रूप से भाग लेती थीं। वह पीएलजीए के अंदर भी पितृसत्तात्मक सोच के विरुद्ध संघर्ष करती थीं।

कॉमरेड सरिता ने इस सड़ी–गली व्यवस्था को बदलकर एक शोषण–उत्पीड़न से मुक्त सम समाज के निर्माण का सपना देखा था। हमारे देश से साम्राज्यवाद, सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद को उखाड़ फेंक कर नव जनवादी सत्ता की स्थापना के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। आइए, कामरेड सरिता के आदर्शों को ऊंचा उठाते हुए उनके सपनों को पूरा करने का संकल्प लेते हैं।

कामरेड दुरसाय वड्डे

24 अगस्त, 2012 को नारायणपुर जिले के फरसगांव थाने के नजदीक मसपुर गांव में हुई फर्जी मुठभेड़ में

कामरेड दुरसाय वड्डे एवं कामरेड सुकलू गोटा की शहादत हुई। कामरेड दुरसाय की झूठी मुठभेड़ हत्या से इलाके की जनता में पुलिस के खिलाफ व्यापक आक्रोश व नाराजगी पैदा हुई। कामरेड दुरसाय गोटा बेनूर इलाके के लोकप्रिय जन नेता थे। कामरेड दुरसाय का जन्म मर्कावेडा गांव के मध्यम किसान परिवार में हुआ था। उनका परिवार आजीविका की तलाश में मसपुर गांव आकर बस गया था। वह अपने पीछे दो भाइयों व एक बहन को छोड़ गये।

कामरेड दुरसाय को खत्म करने पुलिस ने कइयों बार उनके घर पर हमले किये। उनके पिता के साथ बूरी तरह मारपीट की गयी। बचपन में वे वनविभाग के अत्याचार देखे, सहे। इलाके में पार्टी का प्रवेश होते ही वो पार्टी के नजदीक आ गये। पार्टी की राजनीति सीखते हुए ही वो जवान हो गये। शोषण, दमन के खिलाफ लड़ने के लिए वो डीएकेएमएस एवं मिलिशिया में भर्ती हो गये। डीएकेएमएस में सक्रिय रूप से काम करते हुए वो रेंज कमेटी सदस्य बन गये थे। जन समस्याओं को लेकर कई संघर्षों को उन्होंने नेतृत्व किया। आदिवासियों के धर्मांतरण के विरुद्ध जनता में प्रचार करके उनकी समझदारी को बढ़ाया। 2002–03 के दौरान कम उम्र में शादी के खिलाफ जनता को शिक्षित किया। आदिवासी संस्कृति के अच्छे अंशों को बढ़ावा देते हुए, अंधविश्वास जैसे सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ जनता को शिक्षित करते हुए नवजनवादी संस्कृति को जनता में विकसित करने का प्रयास किया। जनता की जमीन को छीनकर नर्सरी बनाने के वन विभाग की कोशिश को दुरसाय ने जनता को संगठित करके नाकाम किया। नरिया गांव के पास वन विभाग के नाकेदारों का घेराव करके उनकी जनविरोधी गतिविधियों को बंद करने की चेतावनी देकर उन्हें छोड़ दिया। पार्टी के हर आव्हान को जनता में ले जाकर उसे सफल करने में दुरसाय आगे रहते थे। वे अच्छे वक्ता थे। लोग उनको सुनने के लिए हमेशा तत्पर रहते थे।

कामरेड दुरसाय की सक्रियता को देखकर दुश्मन उनके पीछे लग गया था। भूमिगत होकर मिलिशिया के साथ रहते हुए उसने अपने कामकाज को आगे बढ़ाया था। 2007 में जब उस इलाके में क्रांतिकारी जनताना सरकार का गठन हुआ तब दुरसाय को पहले पंचायत सरकार में फिर एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार की शाखा कमेटी में चुना गया था। बाद में जब डिविजन क्रांतिकारी जनताना सरकार का गठन हुआ तब उन्हें डिविजन स्तर की शाखा कमेटी में चुन लिया गया था। इलाके में जनताना सरकारों को मजबूत करने में उनका काफी योगदान रहा। उस इलाके में जंगल कटाई एक बड़ी समस्या थी। कामरेड दुरसाय ने क्रांतिकारी जनताना सरकार कमेटी में चर्चा करके जनता के बीच शिक्षा का कार्यक्रम चलाया था। सहकारी टीमों के जरिए कृषि कार्य को विकसित करने की उन्होंने कोशिश की।

जन विरोधियों व जन दुश्मनों पर कार्रवाई करने में कामरेड दुरसाय हमेशा आगे रहते थे। जनविरोधी सियानों के खिलाफ वर्ग संघर्ष संचालित करने में जनता का नेतृत्व करते थे। उन्हें जन अदालत में सजा देते हुए सर्वहार नेतृत्व को मजबूत बनाते थे। वर्ग दुश्मनों के प्रति उनके अंदर तीखा नफरत रहता था।

एरिया में पीएलजीए के द्वारा किये गये सभी हमलों में कामरेड दुरसाय शामिल थे। डौला रेड, झाराघाटी एंबुश,

झारा फ्रंटल अटैक, पुलिस पर की गयी सिंगल एक्शनों में उनकी भागीदारी रही। दुश्मन की गतिविधियों पर उनका हमेशा नजर रहता था। सैनिक कार्रवाइयों में उनकी पहलकदमी के चलते पीएलजीए को काफी मदद मिली। हर टीसीओसी में वो भाग लेते थे। वो अच्छे निशानेबाज थे।

कामरेड दुरसाय सभी कैडरों, लीडरों, जनता के साथ घुलमिल कर रहते थे। वो जिस किसी भी गांव में जाते बच्चे, बूढ़े सब उनके पास जमा होते थे। उन्हें वो गाना, पीटो सुनाते, अपने अनुभव बताते। जनता के साथ जीवंत व घनिष्ठ संबंध रखते थे। गोटा बेनूर पंचायत क्रांतिकारी जनताना सरकार अध्यक्ष कामरेड सुकलू गोटा एवं दुरसाय के बीच मजबूत दोस्ती थी। पार्टी राजनीति के साथ वह और गहरी हो गयी थी। दोनों मिलकर पहलकदमी के साथ अपने पंचायत की सरकार के हर काम को सफल बनाते थे। दोनों ही बहादूर थे। दोनों ही क्रांतिकारी लड़ाई में एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़े थे और एक साथ शहीद हुए। मुखबिर से सूचना प्राप्त करने वाली पुलिस सैकड़ों की संख्या में गांव का घेराव किया था। दुश्मन के सामने आत्म समर्पण न करके आखिरी सांस तक लड़ते रहे। उनकी शहादत इलाके के क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए अपूरणीय क्षति है।

कामरेड सुकलू गोटा

कामरेड सुकलू गोटा, गोटा बेनूर पंचायत क्रांतिकारी जनताना सरकार अध्यक्ष एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार कमेटी सदस्य और डिविजन क्रांतिकारी जनताना सरकार शाखा कमेटी सदस्य भी थे। 24 अगस्त, 2012 को कामरेड दुरसाय के साथ ही कामरेड सुकलू गोटा की मसपुर गांव में हुई मुठभेड़ में शहादत हुई। पहले कई बार दुश्मन के हमलों में ये बाल–बाल बच गये थे। गांव में क्रांतिकारी जनताना सरकार को मजबूत करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

कामरेड सुकलू गोटा बेनूर गांव के मध्यम वर्गीय किसान परिवार में पैदा हुए थे। इनके दो भाई, पत्नी एवं तीन बच्चे हैं। बचपन में ही पार्टी राजनीति से प्रभावित हुए थे। डीएकेएमएस के सदस्य बनकर सक्रिय रूप से काम करते हुए 2011 में पार्टी सदस्य बन गये थे। कुछ समय तक मिलिशिया कमांडर के रूप में भी काम किया था। मिलिशिया में रहते हुए पीएलजीए की सैनिक कार्रवाइयों में भी शामिल हुए थे।

2007 में जब गोटा बेनूर गांव में क्रांतिकारी जनताना सरकार का गठन हुआ था तब कामरेड सुकलू उसका अध्यक्ष चुने गये थे। बाद में वे एरिया क्रांतिकारी जनताना सरकार में जंगल बचाओ कमेटी का अध्यक्ष चुने गये थे। लुटेरी सरकार के सशस्त्र बलों के द्वारा गांव पर लगातार हमले करना, गिरफ्तार करना, जेल भेजना आम बात है। झूठी सुधार योजनाओं के जरिए गांव की एकता को खत्म करने के कई प्रयास किये गये थे। इन सबका सामना करते हुए कामरेड सुकलू ने जनता के पक्ष में मजबूती से खड़े होकर जनता का नेतृत्व किया और एकता को कायम रखा था। जनता की समस्याओं को जब का तब जानते हुए हल करने की कोशिश करते थे। मिलिशिया को सही मार्गदर्शन देते थे। क्रांतिकारी जनताना सरकार के जरिए क्रांतिकारी सुधार योजनाओं पर अमल करने पर वो विशेष ध्यान देते थे। ग्राम सभा में सभी बातों पर खुल कर चर्चा करते थे, करवाते थे। जन समस्याओं पर संचालित जन संघर्षों को काफी मदद देते थे। पीएलजीए की सैनिक कार्रवाइयों में वो सक्रिय रूप से शामिल होते थे। 2006 में पुलिस गिरफ्तार करके उन्हें नारायणपुर ले गयी थी। वहां से छूटकर आने के बाद भी वो आगे–पीछे न होते हुए क्रांतिकारी काम में शामिल हुए। कामरेड सुकलू साहसिक कामरेड थे। गोंगला के बाजार से एक एसपीओ को गिरफ्तार करके पीएलजीए के हाथों सौंपे थे। गांव में भूमकाल काम के समय पुलिस ने घेराव करके फायरिंग की थी। इसमें कुछ मिलिशिया कामरेड्स घायल हुए थे। कुछ ग्रामीणों को पुलिस पकड़कर ले गयी थी। ऐसे समय में सुकलू गांव वालों की हिम्मत बढ़ाई। इलाके के क्रांतिकारी आन्दोलन को कमजोर करने के उद्देश्य से लुटेरे शासक वर्गों के सशस्त्र बलों ने दोनों जन नेताओं की योजनाबद्ध तरीके से हत्या की।

कामरेड पिण्डाल धुर्वा

कामरेड पिण्डाल धुर्वा का जन्म नारायणपुर जिला, कोहकामेट्टा एरिया के एनमेट्टा गांव के गरीब माड़िया आदिवासी परिवार में हुआ था। 23 अक्टूबर, 2012 को सैकड़ों पुलिस बलों ने गांव को घेरकर कामरेड पिण्डाल की गोली मारकर हत्या की। कामरेड पिण्डाल अपनी जमीन की जोताई करके खाना खाने घर पहुंचे थे। दुश्मन घेराव को देखकर कामरेड पिण्डाल यह सोचकर कि किसी भी हालत में पुलिस पकड़कर मारेगी ही, इसलिए कम से कम एक को भी मारूंगा, अपने भरमार से पुलिस पर फायरिंग करने ही वाले थे, कि पुलिस ने उन्हें गोली मार दी। जनता को गांवों से भगाकर पुलिस वालों ने गांव को लूटा था। घरों में घुसकर रूपये, सोना–चांदी, मुर्गे, सुअर लूट कर ले गये थे।

कामरेड पिण्डाल होश संभालते ही क्रांतिकारी राजनीति के करीब आ गये थे। जल–जंगल–जमीन को बचाने वो डीएकेएमएस में शामिल हो गये। जन संघर्षों में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले पिण्डाल वर्ग दुश्मनों के खिलाफ लड़ाई

में भी आगे रहते थे। वो पहले जीआरडी में, बाद में मिलिशिया प्लाटून में भर्ती हुए थे।

उस इलाके के गांवों पर पुलिस लगातार हमले करती है। गिरफ्तारियां, जेल भेजना आम बात है। लेकिन पिण्डाल इन सबसे भयभीत नहीं हुए थे। दिन–रात दुश्मन की गतिविधि पर नजर रखकर जनता की रक्षा करने में उन्होंने अपनी सक्रिय भूमिका निभायी। पीएलजीए के सेकंडरी बलों के साथ मिलकर वो कई सैनिक कार्रवाइयों में शामिल हुए। 2008–09 के विधान सभा चुनावों के दौरान चुनाव बहिष्कार व प्रतिरोध में कामरेड पिण्डाल शामिल थे। 2011 में गुण्डा गिरोह व एसपीओ पर किये गये हमले में भी थे। 2012 में कुकड़झोर पुलिस कैंप पर पीएलजीए के द्वारा किये गये आपरेशन प्रयोग–2 हमले में भी कामरेड पिण्डाल ने अपने हिस्से की भागीदारी निभायी थी। इस तरह वो गुण्डाधुर जैसे अपने पुरखों की लड़ाकू विरासत को जारी रखे।

पूर्व बस्तर डिविजन

कामरेड मीना (पुनेम लक्के)

20 जून, 2013 को हमारी पीएलजीए की एक टुकड़ी ने राष्ट्रीय राजमार्ग–43 पर केशकाल कस्बे के पास एक पुलिस वाहन पर हमला किया। इस हमले में एक पुलिस जवान मारा गया और 4 घायल हो गए। हमले को सफल बनाने की कोशिशों के दौरान हमारी पीएलजीए की साहसी योद्धा व पलटन–17 की पलटन पार्टी कमेटी सदस्या कामरेड मीना शहीद हो गईं। उनकी उम्र लगभग 29 साल थी। घटना स्थल से कामरेड मीना के पार्थिव शरीर को लाकर पीएलजीए के साथियों ने क्रांतिकारी परम्परा के साथ उनका अंतिम संस्कार किया।

उनकी मौत से एक महीना पहले यानी 12 अप्रैल 2013 के दिन गड़चिरोली जिले के सिंदेसुर गांव में पुलिस द्वारा योजनाबद्ध तरीके से किए गए हमले में उनके बड़े भाई कामरेड कैलाश बहादुरी के साथ लड़ते हुए शहीद हुए थे। इसके बावजूद वह क्रांति में बलिदानों की अनिवार्यता को समझते हुए दृढ़ संकल्प के साथ उनकी मौत के शोक से उबरते हुए उन्होंने इस हमले में भाग लिया था। कामरेड मीना पिछले 16 सालों से क्रांतिकारी आन्दोलन में कई दिक्कतों और बाधाओं का सामना करते हुए दृढ़ता के साथ आखरी दम तक लाल पताके को थामे रखा। वह अपनी क्रांतिकारी जीवन में अलग–अलग इलाकों में अलग–अलग जिम्मेदारियों का निर्वाह करती आयी।

कामरेड मीना का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन के गंगालूर एरिया के डुमरी परालनार गांव के एक गरीब आदिवासी किसान परिवार में हुआ था। उनका गांव लौह नगरी बैलाडीला के करीब है। कामरेड मीना अपने माता–पिता की दूसरी संतान थीं। घर में उनका नाम पुनेम लक्के रखा गया था। चूंकि वह क्रांतिकारी आन्दोलन के बीच में पली–बढ़ी थीं, इसलिए उसका प्रभाव कामरेड मीना और उनके भैया पर भी हमेशा रहा। वह गांव के हमउम्र युवक–युवतियों के साथ पार्टी द्वारा आयोजित सभाओं में जातीं, संघर्षों में भाग लेती थीं। इस तरह वह क्रांतिकारी आन्दोलन से बेहद प्रभावित थीं। उनके भैया और गांव के अन्य क्रांतिकारियों से प्रेरणा लेते हुए कामरेड मीना ने भी कम उम्र में ही 1999 में पार्टी में भर्ती हो गईं।

पार्टी में आने के बाद उन्होंने एक साल तक गंगालूर दस्ते में सदस्य के तौर पर काम किया। बाद में पार्टी ने उन्हें माड़ डिवीजन में भेजने का निर्णय लिया। कामरेड मीना ने उस प्रस्ताव को खुशी से स्वीकार करते हुए 1999 में माड़ डिवीजन में कदम रखा और इन्द्रावति दस्ता की सदस्या बन गईं। उन्होंने पार्टी में आकर ही पढ़ना–लिखना सीखा। मासूम सी दिखने वाली कामरेड मीना ने कठिन गुरिल्ला जिन्दगी में आने वाले सभी तकलीफों व बाधाओं का दृढ़ता के साथ सामना करते हुए अपनी राजनीतिक व मिलिटरी समझदारी को बढ़ाने की कोशिश की। वह एक अनुशासित, मिलनसार और हंसमुख स्वभाव की कामरेड थीं। वह सबके के साथ आसानी से घुलमिल जाती थीं। जनता के साथ घनिष्ठ सबंध बनाने की कोशिश करती थीं। इन गुणों की वजह से जल्द ही उन्होंने यहां अपने साथियों और जनता का विश्वास जीत लिया। उन्हें 2000 में पार्टी सदस्यता दी गई। 2003 में उन्हें एरिया कमेटी सदस्य के तौर पर पदोन्नति देकर कुतुल इलाके में महिला एलजीएस की डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। वह उस जिम्मेदारी को बखूबी निभाने की कोशिश की और 2004 से उस एलजीएस की कमांडर बनकर उसका नेतृत्व किया। वह अपने एलजीएस को राजनीतिक व मिलिटरी तौर पर सक्षम बनाने का प्रयास किया। एलजीएस कमांडर के तौर पर उन्होंने कई कार्रवाइयों में भाग लिया और उनका नेतृत्व किया। एलजीएस कमांडर के तौर पर काम करते हुए एरिया कमांड की सदस्य के रूप में भी काम किया। जिस इलाके में वह एलजीएस काम करती थी उस इलाके की जनता में राजनीतिक प्रचार के अलावा वहां की जनता को संगठित करने व उनके रोजमर्रे के कामों में भी

शामिल होकर वहां की जनता के दिलों में जगह बना ली। 2005 में लुटेरी सरकार द्वारा चलाए गए फासीवादी सलवा जुडूम का प्रतिरोध करने के लिए वह अपने एलजीएस के साथ इन्द्रावति एरिया के जाटलूर इलाके में जाकर कई सलवा जुडूम गुण्डों व पुलिस पर हमले की कार्रवाइयों में भाग लिया। वहां की जनता को सलवा जुडूम राहत शिविरों में जाने से रोकने के लिए उन्हें धीरज बंधाया और प्रतिरोध करने के लिए संगठित किया।

उनकी सांगठनिक क्षमता को देखते हुए 2006 में आन्दोलन की जरूरत के मुताबिक उन्हें सांगठनिक क्षेत्र में बदलने का निर्णय लिया गया और नयबेरेड़ एलओएस कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गई। सांगठनिक अनुभव नहीं होने के बावजूद भी उन्होंने उसे चुनौती के रूप में लेकर मन लगाकर काम किया और अपनी सांगठनिक समझदारी को बढ़ाते हुए जनता को संगठित किया। वह सांगठनिक विषयों के बारीकियों को सीखने का प्रयास करते हुए विभिन्न जन समस्याओं पर जनता को गोलबंद कर कई संघर्षों में उतारा। क्रांतिकारी जनताना सरकारों को मजबूत और विस्तार करने का प्रयास किया। उसी दौरान 2005–06 में लुटेरी सरकार ने पश्चिम बस्तर की तर्ज पर यहां भी फासीवादी सलवा जुडूम का विस्तार करने की मंशा से गोपनीय तरीके से गांवों के लम्पट युवकों को एसपीओ का प्रशिक्षण देकर, जन–विरोधियों को भड़काकर मैदान तैयार करने की कोशिश की थी। उसके खिलाफ चलाये गए अभियान में कामरेड मीना ने भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस तरह यहां भी उन्होंने जनता का विश्वास जीत लिया और जल्द ही एक लोकप्रिय नेता के रूप में उभरकर सामने आईं।

आन्दोलन की जरूरत को देखते हुए 2008 में उन्हें दुबारा इन्द्रावति एरिया में पलटन–16 में पलटन पार्टी कमेटी सदस्य के तौर पर बदलने का निर्णय लिया गया। उन्होंने उसे स्वीकारते हुए दुबारा इन्द्रावति इलाके में कदम रखा। इस इलाके में फासीवादी सलवा जुडूम ने कई गांवों को जलाकर राख कर दिया था, करोड़ों रुपए की सम्पति को नुकसान कर दिया था, जनता जंगलों में शरण लेकर रह रही थी। जनता को सुरक्षा प्रदान करते हुए मदद की। उन कामों में कामरेड मीना ने भी अपना योगदान दिया। जनता के सुख–दुख की साथी बनकर उनके साथ दृढ़ता से खड़ी रहीं। इस दौरान भी उन्होंने कई छोटी व मध्यम किस्म की सैनिक कार्रवाइयों में भाग लिया और उन्हें सफल बनाने में अपनी भूमिका निभाई। जनवरी 2013 में उन्हें पूर्व बस्तर के केशकाल इलाके के पलटन–17 में बदलने का निर्णय लिया गया। उन्होंने उस निर्णय को सहर्ष स्वीकारते हुए केशकाल इलाके में कदम रखा। वहीं पर उन्होंने आखरी दम तक काम किया।

कामरेड मीना ने अपनी क्रांतिकारी जिन्दगी के सफर में कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उन्होंने क्रांति के लिए समर्पित होकर काम किया। उन्होंने हर जिम्मेदारी को चुनौती के रूप में लेकर काम किया। पार्टी ने उन्हें जहां भी भेजा वहां जाकर काम करने के लिए हमेशा तैयार रहीं। उनके भाई कामरेड कैलाश की बालाघाट में गिरफ्तारी के दौरान हो या उनकी शहादत के बाद, वह कभी विचलित नहीं हुईं और हिम्मत नहीं हारी। क्रांति की राह में हर तरह की परिस्थितियों का दृढ़ता के साथ सामना करने की भावना को ऊंचा उठाया। नव जनवादी क्रांति के महान लक्ष्य के लिए उन्होंने अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया।

कामरेड विजय (मन्देर नेताम)

पूर्व बस्तर डिविजनल एक्शन टीम के सदस्य कामरेड विजय की 9 अक्टूबर, 2013 को रेमावण्ड गांव में पुलिस ने झूठी मुठभेड़ में हत्या की। उस वक्त वह डिविजनल कमेटी के द्वारा सौंपे गये रेक्की काम पर थे। रेमावण्ड के एक घर में आश्रय लेकर वह अपने काम पर जा रहे थे तब मुखबिर की सूचना पाकर बेनूर, नारायणपुर से सैकड़ों की संख्या में आयी पुलिस गांव को घेरकर कामरेड विजय को गिरफ्तार किया था। सूचनाएं एकत्रित करने के पुलिसिया हथकंडों को धत्ता बताकर दुश्मन को रत्ती भर समाचार भी नहीं दिया। भयानक यातनाएं देकर भी जब पुलिस कामरेड विजय के मुंह से छोटी सी बात भी नहीं उगलवा पायी तब उन्हें गोली मारकर यह झूठा दावा करते हुए कि भारी मुठभेड़ में एक माओवादी को मार गिराया गया है, अपनी रटी–रटायी कहानी को मीडिया के सामने एक बार और दोहराई। शहादत के वक्त कामरेड विजय की उम्र 22 वर्ष से भी कम थी।

कामरेड विजय ने नारायणपुर जिले के वयानार इलाके के दुड़मी गांव के गरीब आदिवासी किसान परिवार में जन्म लिया था। वह अपने पीछे मां–बाप, दो भाइयों एवं एक बहन को छोड़ गये हैं। दुड़मी गांव में जमीन की कमी के कारण कामरेड विजय के मां–बाप अपने बच्चों को लेकर आमदाई एलओएस इलाके के ईकनार गांव के मुचतेर पारा में आकर बस गये हैं। कामरेड विजय यहीं पले–बड़े थे। कामरेड विजय ने पांचवीं कक्षा तक की पढ़ाई की थी। पार्टी में भर्ती होने के लिए उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी। गांव में

क्रांतिकारी गतिविधियां पहले से ही जारी थी। गावं व एरिया के क्रांतिकारी क्रियाकलापों से प्रभावित कामरेड विजय छोटी उम्र से ही पार्टी में भर्ती होने की जिद ले बैठे थे। कम उम्र का हवाला देकर उन्हें गांव में ही काम करने कहा गया था। पढ़ाई छोड़ने के बाद डेढ़ साल तक वह घर पर रहे। उस समय वह बाल संगठन में रहते हुए सीएनएम कलाकारों के साथ मिलकर सांस्कृतिक आयोजनों में गीत–नृत्य पेश करते थे। प्रचार कार्यक्रम में शामिल होते थे। आखिर बेहद् जिद करके 14–15 साल की छोटी उम्र में, 2006 में वे पार्टी में भर्ती हो गये थे। मासूम सा दिखने वाले कामरेड विजय ने कठिन गुरिल्ला जिन्दगी में आने वाले सभी तकलीफों व बाधाओं का दृढ़तापूर्वक सामना किया। अपनी राजनीतिक व मिलिटरी समझदारी को बढ़ाने की हमेशा कोशिश की। भर्ती के बाद साल भर उन्हें सीएनएम का काम दिया गया था। लेकिन कामरेड विजय को शुरू से ही सैनिक कार्रवाईयों में रुचि थी। उनकी रुचि को देखते हुए उन्हें पीएल–18 में भेजा गया था। कुछ समय बाद ही उन्हें एसजेडसीएम के गार्ड की जिम्मेदारी दी गयी थी। पार्टी के इस निर्णय का उन्होंने तहेदिल से स्वीकार किया और अप्रैल 2008 से लेकर मार्च, 2011 तक तीन साल की तयशुदा समयावधि पूरी होते तक उसी जिम्मेदारी में रहे। 2009 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गयी थी। कामरेड विजय पढ़ाकू थे। हमेशा पार्टी पत्रिकाओं, पर्चों, परिपत्रों का ध्यान से पढ़ते थे और अनजान विषयों के बारे में वरिष्ठ कामरेडों से पूछकर जानकारी लेते थे। साथी कामरेडों से राजनीतिक चर्चा करते थे। कामरेड विजय समिष्ठि कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते थे।

कामरेड विजय सौम्य, हंसमुख व मिलनसार थे। किसी के साथ भी तुरंत घुलमिल जाते थे। बचपन से ही क्रांतिकारी लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता मजबूत थी। क्रांतिकारी जीवन में पीछे मुड़कर देखने का सवाल ही नहीं होता है, यह भावना से ओतप्रोत थे। 2011 में एक बार वह घर देखने गये थे। घर वालों के साथ बातचीत में उन्हें हल्का सा लगा कि मां–बाप घर की समस्याओं के बारे में बताकर उन्हें घर में रहने की ओर संकेत दे रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया ''मेरा जीना या मरना पार्टी में ही। तुम लोग मुझे घर में रुकने बोलोगे तो मैं आईंदा देखने भी नहीं आऊंगा''। घर से आने के बाद अपने जिम्मेदार साथी को उन्होंने यह बात बताई थी। कामरेड विजय की इस क्रांतिकारी प्रतिबद्धता सभी के लिए आदर्श है।

2011 में उन्हें बीसीटीएस–बुनियादी कम्यूनिस्ट प्रशिक्षण शाला में राजनीतिक प्रशिक्षण के लिए भेजा गया था। करीबन साल भर वह स्कूल में रहे। वहां से निकलने के बाद उन्हें पूर्व बस्तर डिविजन एटी में रखा गया था। कामरेड विजय गोण्डी, हल्बी के साथ–साथ हिन्दी ठीक–ठाक बोल लेते थे। छत्तीसगढ़ी भाषा भी सीख रहे थे। उनके स्वभाव, सीखने की तमन्ना एवं आगे की जरूरतों को ध्यान में रखकर उन्हें एटी में रखा गया था। कामरेड विजय ने पार्टी जरूरतों के मद्देनजर मोटर सायकल, चार चक्का गाड़ी भी सीख लिया था।

कामरेड विजय के अन्दर अपनी कमजोरियों व गलतियों के प्रति आलोचनात्मक नजरिया थी। उन्हें जब भी उनकी गलतियों व कमजोरियों के बारे में बताया गया, वह सकारात्मक ढंग से उन्हें लेते हुए, गहरी आत्मालोचना करते थे। और अपने व्यवहार में सुधार लाने भरसक प्रयास करते थे। कामरेड विजय साथी कामरेडों के साथ दोस्ताना तरीके से व्यवहार करते थे। वरिष्ठ कामरेडों के साथ उनका व्यवहार शालीन रहता था। गार्ड रहते हुए उन्होंने एसजेडसी कामरेड की हर संभव मदद की। हर पल उनकी सुरक्षा पर ध्यान रखते थे। नवजवान कामरेडों के साथ आत्मीय व्यवहार रहता था। जनता के साथ मधुर संबंध बनाते थे। वर्ग दुश्मनों, मुखबिरों के प्रति उनके मन में तीखी नफरत होती थी।

2013 अक्टूबर महीने में उन्हें रोड रेक्की काम पर भेजा गया था। अपने कार्य निर्वाह के दौरान दुश्मन के हाथों फंसकर वह झूठी मुठभेड़ के शिकार हो गये। उस समय वह निहत्थे थे। विकास की संभावनाओं से भरपूर एक नवजवान कामरेड को खोना पूर्व बस्तर के क्रांतिकारी आन्दोलन के लिए काफी नुकसानदेह है।

कामरेड रोंडा (फूलराम कोवाची)

ओडिशा राज्य के बरगढ़ जिले के गंधमर्दन पर्वत पर 7 सितंबर, 2013 को एसओजी एवं जिला पुलिस बल के साथ हुई मुठभेड़ में कामरेड रोंडा की शहादत हुई। कामरेड रोंडा का जन्म 17 साल पहले कोंडागांव जिला, पूर्व बस्तर डिविजन के वेड़मा आरपीसी के कोटमेट्टा गांव में हुआ था। गरीब किसान परिवार में पैदा होने के कारण घर में रहते समय स्कूली पढ़ाई के नजदीक नहीं पहुंच सके। 2006 में डौला एरिया के क्रांतिकारी आन्दोलन के विस्तार के तहत पार्टी उनके गांव पहुंची। तब वह बहुत छोटे थे। इस तरह क्रांतिकारी राजनीति से बचपन में ही परिचय हो गया। 14 साल की छोटी उम्र में ही 2010 में जिद करके मिलिशिया

में भर्ती हुये थे। 2012 में वे पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में भर्ती हुये थे। मिलिशिया में रहते हुए कामरेड रोंडा पुलिस को हैरान–परेशान करने वाली कई कार्रवाइयों में शामिल हुये थे। वयानार कैंप पर तोप विस्फोट करने, गश्त पर आयी पुलिस पर बूबीट्रेप विस्फोट करने आदि में कामरेड रोंडा की विशेष भूमिका रही। सैनिक कार्रवाइयों में कामरेड रोंडा की रुचि एवं उनके अनुशासन को देखकर भर्ती होने के छह महीने के अंदर ही उन्हें डीवीसीएम गार्ड की जिम्मेदारी दी गयी थी। गार्ड की जिम्मेदारी वो बखूबी निभा रहे थे। विश्वसनीयता, अनुशासन, जिद व लगन आदि खूबियों को देखकर कामरेड रोंडा को एक विशेष कार्य के लिए ओडिशा भेजा गया था। वो खुशी से सौंपे गये कार्य को अंजाम देने में लगे थे। ओडिशा में उन्होंने अपना नाम बदलकर धनंजय रखा था। घर का नाम फूलराम था लेकिन गांव के दोस्त उन्हें प्यार से रोण्डा कहकर पुकारते थे। उसी नाम से वह पूर्व बस्तर में काम करते रहे। 7 सितंबर, 2013 को गंधमर्दन पर्वत पर डेरा डाले पीएलजीए पर ओडिशा पुलिस ने हमला किया था। इस हमले में पुलिस बलों का मुकाबला करते हुए कामरेड रोण्डा वीरगति को प्राप्त हुए।

कामरेड रोण्डा मेहनती थे। काम करने हर पल तैयार रहते थे। सेंट्री, किचन, सामान ढोने ओदि समिष्ठि कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेते थे। छोटी उम्र होने के बावजूद वो सभी के साथ मिल जुलकर रहते थे। घर से अनपढ़ कामरेड रोण्डा पार्टी में भर्ती होने के बाद कम समय में ही पढ़ना–लिखना सीखे थे। आइये, कामरेड रोण्डा के अधूरे सपने को पूरा करने आखिरी सांस तक आन्दोलन में डटे रहने का संकल्प लेते हैं।

कामरेड अमिता

कामरेड अमिता ने एक क्रांतिकारी मजदूर परिवार में 1995 में जन्म लिया था। उसने 6वीं कक्षा तक की पढ़ाई की थी। क्रांतिकारी परिवार में पैदा होने के कारण बचपन से ही उसे क्रांतिकारी माहौल मिला। मजदूर बस्ती में पली – बढ़ी कामरेड अमिता बचपन से ही मेहनती थीं। घरेलू कार्यों में मां का हाथ बंटाती थीं। पढ़ाई छूटने के बाद वह 2011 में दंडकारण्य में आयी थीं। यहां के क्रांतिकारी आंदोलन का हिस्सा बन वह ढ़ाई साल तक काम करती रही। एक अच्छे क्रांतिकारी के रूप में विकसित होने व दंडकारण्य आंदोलन की काफी सेवा करने की असीम संभावनाएं उसके सामने मौजूद थीं। लेकिन अपनी व्यक्तिगत समस्या को पार्टी के तौर – तरीकों में हल करने की बजाय गलत कदम उठाकर कम उम्र में ही 9 अगस्त को उन्होंने आत्म हत्या की थीं। व्यक्तिगत, परिवारिक, स्वास्थ्य संबंधी हो या और किसी भी तरह की समस्या का पार्टी तौर–तरीकों में हल करते हुए आगे बढ़ने और आखिरी सांस तक आन्दोलन में डटे रहने की राजनीतिक चेतना से सभी कामरेडों को लैस होना चाहिए। कामरेड अमिता की शहादत से हमें यही सीख लेनी चाहिए।

2011 में दंडकारण्य में आने के बाद कामरेड अमिता ने बुनियादी साम्यवादी प्रशिक्षण शाला में दाखिला ली थीं। साल भर के प्रशिक्षण के बाद उसे उत्तर रीजनल कमेटी के स्टाफ दलम में शामिल किया गया था। बहुत कम समय में ही उसने टाइपिंग सीखी और टाइपिस्ट/कंम्प्यूटर ऑपरेटर की जिम्मेदारी निभाने लगी थीं। विभिन्न पार्टी कमेटियों की रिपोर्ट्स, समीक्षाएं तय समय में टाइप करती थीं। पार्टी की जरूरत के मुताबिक ज्यादा मेहनत करके भी काम को पूरा करती थीं। टाइपिंग के अलावा वह पीटी, ड्रिल, सेंतरी, किचन व अन्य सामूहिक कार्यों में बराबर भाग लेती थीं। कामरेडों को पढ़ाने–लिखाने का काम भी करती थीं। खासकर 2012–13 में पूर्व बस्तर डिविजन के मुख पत्र ''भूमकाल संदेश'' का ज्यादातर टाइपिंग उसी ने की। डिविजन प्लीनम के पीओआर सहित तमाम टाइपिंग कार्य उसी ने किया।

कामरेड अमिता हंसमुख थीं। सभी के साथ घुलमिल जाती थीं। बहुत कम समय में ही वह यहां की गोंडी भाषा को न केवल सीखी बल्की उसे स्थानीय जनता के ही समान बोलती (उच्चारण) थीं। कोई भी आसानी से यह चिन्हित नहीं कर पाते थे कि वह बाहर से आई हैं। पहली नजर में वह माड़िया लड़की ही लगती थीं। जनता के साथ आदरपूर्वक व्यवहार करती थीं। साथी कामरेडों के साथ दोस्ताना संबंध रखती थीं। वरिष्ठ कामरेडों का बहुत ख्याल रखती थीं। वह एक नवजवान, ऊर्जावान, मेहनती कामरेड थीं। वह अपनी गलतियों को स्वयं चिन्हित करती थी एवं खुलकर आत्मालोचना करती थीं। साथ ही दुसरों की गलतियों को जब भी देखती, ठोस रूप से आलोचना रखती थीं। कामरेड अमिता की शहादत से दंडकारण्य आंदोलन ने एक उदीयमान कामरेड को खोया।

कामरेड अमिता की शहादत से सबक लेंगे। उच्चा राजनीतिक चेतना से लैस होकर आखिरी सांस तक जनयुद्ध में डटे रहेंगे। हर तरह की समस्याओं का पार्टी तरीकों में हल करके आगे बढ़ेंगे।

कामरेड ज्योति (टोकडी वट्टी)

पूर्व बस्तर डिविजन के कुवानार एरिया के किलेम पंचायत आरपीसी के छोटे बुरगुम गांव के पास बारसूर–डौला रोड पर 26 अगस्त, 2013 को हुई मुठभेड़ में कामरेड ज्योति एवं कामरेड जानो शहीद हुईं। कामरेड ज्योति आदेहवेडा आरपीसी के कवानार गांव के मध्य वर्गीय आदिवासी किसान परिवार में पैदा हुई थीं। कामरेड ज्योति परिवार की चौथी संतान थीं। क्रांतिकारी आन्दोलन के प्रभाव के चलते वह बचपन में बाल संगठन में शामिल हो गयी थीं। बाद में सीएनएम की सदस्या बन कर एक साल तक उसने काम किया था। सीएनएम में रहते हुए ही वह मिलिशिया में भी भर्ती हो गयी।

मिलिशिया में कामरेड ज्योति ने सक्रिय भूमिका अदा की। मिलिशिया कर्तव्यों का पालन करने में आगे रहती थीं। जनताना सरकार की रक्षा करने में, नेतृत्व की सुरक्षा में, दुश्मन के आने के रास्तों में पेट्रोलिंग, रात एंबुश, गड्डे खोदने आदि में वह हमेशा अपनी भागीदारी निभाती थीं। वर्ग संघर्ष की चेतना से लैस कामरेड ज्योति गांव के जन विरोधी सियानों को जन अदालत में खड़ा करने में, मुखबिरों पर कार्रवाइयों में, जनयुद्ध की जरूरत के सामान ढोने में कहीं भी कोताही नहीं बरतती थीं। 2010 में पंचायत आरपीसी के कृषि काम में मिलिशिया के साथ शामिल होकर बड़े पैमाने पर साग–सब्जी का फसल उगाने में कामरेड ज्योति की महत्वपूर्ण भागीदारी रही। उस वर्ष आरपीसी की सभी जनता को साग–सब्जी बांटी गयी थी। 2008 में जन मिलिशिया में भर्ती होकर एक साल तक कृषि काम में थीं।

बाद में 2011 में पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में पीएलजीए में भर्ती हुई थीं। सैनिक मामलों में उनकी रुचि को देखते हुए उन्हें एलजीएस में रखा गया था। फरवरी 2012 में उसे डीवीसी सदस्या की गार्ड की जिम्मेदारी दी गयी थी। डीवीसीएम की सुरक्षा का हर पल ख्याल रखती थीं। पार्टी के द्वारा विशेष काम के लिए जब दूसरे राज्य में जाने के लिए कामरेड ज्योति को चुना गया था, तब वह सहर्ष तैयार हो गयी और विशेष काम को सफल बनाने में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई।

कामरेड ज्योति हंसमुख थीं। सभी के साथ घुलमिलकर रहती थीं। नेतृत्वकारी कामरेडों का हमेशा ख्याल रखती थीं। समिष्ठि कार्यों में बढ़–चढ़कर हिस्सा लेती थीं। क्रांतिकारी राजनीति को जानने समझने के लिए वह तत्पर रहती थीं। जनता के साथ आत्मीय व मधुर संबंध बनाकर रखना कोई उनसे सीखें। कामरेड ज्योति के विकास की ढ़ेरों संभावनाएं थीं। लेकिन दुश्मन के साथ लड़ते हुए कम उम्र में ही कामरेड ज्योति ने जनयुद्ध में अपनी जान की कुरबानी दी।

कामरेड जानो (जुगरी वंजामी)

पूर्व बस्तर डिविजन के कुवानार एरिया के किल्लेम आरपीसी के छोटे बूरगूम गांव के पास 26 अगस्तर, 2013 को बारसूर–डौला रोड़ पर एरिया डॉमिनेशन पर निकली पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में कामरेड ज्योति के साथ, कामरेड जानो की भी शहादत हुई। कामरेड जानो का जन्म कोंडागांव जिले के किल्लेम गांव के ओड़ाकोट्टुम पारा में एक मध्य वर्गीय किसान परिवार में हुआ था। आस–पास में क्रांतिकारी माहौल होने के चलते वो बचपन से ही पार्टी के संपर्क में थीं। 2004 में वो बाल संगठन में भर्ती हुई थीं। 2008 में वो सीएनएम में शामिल होकर अपने नाच–गानें के माध्यम से क्रांतिकारी राजनीतिक प्रचार आन्दोलन का हिस्सा बनी थीं। न सिर्फ गांव में बल्कि पूरे एरिया में घूमती थीं। बाद में 2009 में मिलिशिया प्लाटून में भर्ती हुईं। मिलिशिया में रहते हुए वो डिविजन आन्दोलन की कई गतिविधियों में शामिल रही। सेकंडरी, मेन फोर्स के साथ मिलकर प्रतिरोध कार्रवाइयों में शामिल हुई। आरपीसी के समिष्ठि कृषि क्षेत्र में काम करते हुए उन्होंने पीएलजीए की जरूरतों को पूर्ति करने में अपनी भूमिका निभाई। 2010 में कामरेड जानो पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रूप में भर्ती हुईं। एक अनुशाषित सिपाही की तरह एक साल तक काम करने के बाद घर की कठिन परिस्थिति का हवाला देकर घर चली गयी थीं। साल भर के अंदर ही वो फिर से पीएलजीए में काम करने आयी थीं। 2 साल काम करने के बाद 2013 में मां के काफी बीमार होने के कारण पार्टी से अनुमति लेकर फिर घर गयी थीं। लेकिन घर में रहते हुए भी उन्होंने पार्टी काम नहीं छोड़ा। घर का काम संभालते हुए मिलिशिया में काम करने लगी थीं। कामरेड ज्योति, कामरेड जानो सहित तीन कामरेडों की एक छोटी टीम के साथ 26

अगस्त को डिविजन पार्टी के द्वारा सौंपे गये काम पर जा रही थी। अचानक बूरगूम गांव के पास पुलिस के साथ हुई मुठभेड़ में कामरेड जानो शहीद हो गयी।

कामरेड जानो मिलनसार थीं। जनता की रक्षा के लिए हर समय तैयार रहती थीं। घर की समस्या से विचलित होकर दो बार वो घर वापस गयी थीं, लेकिन पार्टी से हमेशा के लिए दूर नहीं हुई। किसी न किसी रूप में पार्टी व जनता की सेवा करने का मजबूत इरादा रखती थीं। आखिर जनता की सेवा में ही उन्होंने अपनी जान कुरबान कर दी।

कामरेड सुखराम कोर्राम

अगस्त 13, 2013 के दिन झारा कैंप की पुलिस ने कामरेड सुखराम कोर्राम की वडेनहोड़ गांव में झूठी मुठभेड़ में क्रूरतापूर्वक हत्या की। कामरेड सुखराम कोर्राम नारायणपुर जिला, पूर्व बस्तर डिविजन के कुवानार एरिया के कोंगेरा गांव के वडेनहोड़ पारा में जन्म लिया था। इस इलाके में पार्टी के विस्तार के समय से ही वह क्रांतिकारी राजनीति के प्रभाव में आ गये थे। नवजवान होते ही वह संगठन में शामिल होकर जन संघर्षों में भाग लेने लगे थे। वयानार इलाके में शुरू से ही जन विरोधी सियानों के खिलाफ वर्ग संघर्ष जारी था। इसी संघर्ष को देखकर, बाद में उसमें शामिल होकर कामरेड सुखराम एक क्रांतिकारी बन गये थे। 2002 में वह संगठन सदस्य बन गये थे। 2003 में संगठन का नेता चुने गये थे। 2006 में जब क्रांतिकारी जनताना सरकार का गठन हुआ था तब वह कमेटी अध्यक्ष चुने गये थे। क्रांतिकारी जनताना सरकार को मजबूत करने में, जनता को संगठित करने में सुखराम का महत्वपूर्ण योगदान रहा। जन विरोधी मुखियाओं, मुखबिरों पर जब का तब कार्रवाई करने में सुखराम आगे रहते थे। मिलिशिया के साथ रहते हुए अपनी जिम्मेदारी निभाते थे। 2009 में घर की समस्या व बीमारी के चलते कुछ समय के लिए पार्टी कामकाज में ज्यादा सक्रिय नहीं थे। लेकिन बाद में फिर से सक्रिय हो गये थे। मिलिशिया के साथ में रहते हुए अपना काम करते थे। कामरेड सुखराम इलाके में पीएलजीए के द्वारा किये गये ज्यादातर हमलों में शामिल थे और उन्हें सौंपे गये कार्य पूरा करते रहे। कोंगेरा एंबुश, पांच पुलिस जवानों को गिरफ्तार करके जनता के सामने रखने की घटना, झारा हमला आदि में उन्होंने भाग लिया था। लुटेरी सरकार की गाड़ियों को जब्त करके सामान जनता में बांटने, गाड़ियों को जलाने आदि तमाम कार्रवाइयों में सक्रिय रूप से शामिल थे।

पुलिस कामरेड सुखराम को पकड़ने या मारने की कइयों कोशिश की लेकिन जनता की मदद से वह हमेशा पुलिस को चकमा देते थे। आत्म समर्पण के लिए भारी दबाव के बावजूद कामरेड सुखराम आखिरी तक जनता के पक्ष में मजबूती से खड़े थे। 13 अगस्त, 2013 को पार्टी का पुराना दुश्मन, नाम बदलकर गुप्त रूप से पास के गांव में रह रहे दिलीप सोढ़ी की मुखबिरी पर झारा कैंप से आयी पुलिस कामरेड सुखराम को गांव में ही पकड़कर बेदम पिटाई करके उनकी निर्मम हत्या की। भयानक यातनाएं देने के बावजूद उन्होंने एक शब्द पुलिस को नहीं बतायी। उसी दिन झारा से ही निकली एक और पुलिस टुकड़ी पर वापसी के समय पीएलजीए ने हमला करके तीन पुलिस जवानों को मौत के घाट उतार कर दो को गंभीर रूप से घायल किया था। फर्जी मुठभेड़ में कामरेड सुखराम की हत्या करके पुलिस ने इनामी माओवादी को मार गिराने का दावा करते हुए मीडिया को बयान जारी किया था। कामरेड सुखराम के घर वाले व आस–पास के गांव वाले नारायणपुर जाकर दो दिन तक संघर्ष करके लाश को लाकर क्रातिकारी परंपरा के साथ अंतिम संस्कार किया था। कामरेड सुखराम कोर्राम आखिरी सांस तक दुश्मन के सामने न झुकते हुए, जनता के बीच में रहकर अपनी जिम्मेदारियों को निभाये थे। नित्य दमन के बीच ही वह पार्टी व जनता पर अटूट विश्वास के साथ क्रांतिकारी आन्दोलन को आगे बढ़ाने के काम में आखिरी तक डटे रहे।

पश्चिम बस्तर डिविजन

कामरेड ताती सन्नू (हितेश)

लुटेरी सरकार के भाड़े के सशस्त्र बलों से नूकनपाल में 27 नवंबर 2013 को लड़ते हुए कामरेड हितेश शहीद हुए। रोड ओपनिंग पार्टी पर नूकनपाल के पास पीएलजीए ने जबर्दस्त हमला किया था। इस हमले में पीएलजीए ने सीआरपीएफ के चार जवानों को मार गिराया अैर तीन अन्य जवानों को घायल कर तीन हथियार जब्त किये थे। कामरेड हितेश के शव को उनके गृह ग्राम ले जाया गया, जहा परिवार, जनता एवं पीएलजीए ने मिलकर उनका अन्तिम संस्कार किया। अंतिम संस्कार में शामिल सैकड़ों लोगों ने अपने योद्धा को नम् आंखों से आखरी विदाई दी। उनके आदर्शों को ऊंचा उठाकर उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लिया।

24 वर्षीय कामरेड हितेश का जन्म बीजापूर जिला, पश्चिम बस्तर डिविजन के अंतर्गत पिड़िया एरिया के डोड्डी तुमनार गांव के एक गरीब किसान परिवार में हुआ था।

मां, बाप ने अपने बेटे का नाम सन्नू रखा था। वह परिवार की दुसरी संतान थे। वह अनपढ़ थे। उन्होंने अपने पीछे एक बड़े भाई और एक छोटे भाई को छोड़ गये हैं। घर में रहते समय खेती व अन्य कामों में मां–बाप का हाथ बंटाते थे। कामरेड हितेश बचपन में बाल संगठन में सक्रिय थे। उसके बाद कामरेड हितेश को मिलिशिया प्लाटून में रखा गया था।

फासीवादी सलवा जुडूम के आतंक ने सन्नू के संवेदशील मन को भीतर तक झकझोर दिया था। उन्होंने नव जनवादी क्रांति की राजनीति से प्रेरित होकर 2006 में पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में पार्टी का झण्डा थाम लिया। तब से उनका नाम हितेश बन गया। अपने सात सालों के क्रांतिकारी जीवन में उन्हेंने पहले पिड़िया एलओएस सदस्य के रूप में काम किया। अपने मिलनसार गुण व स्वभाव के चलते वह आसानी से सभी साथियों के साथ घुल मिल जाते थे। वे सभी कामों में पहलकदमी के साथ भाग लेते थे। पुराने साथियों से सीखने के लिए हमेशा कोशिश करते थे। वे हमेशा अनुशासन का पालन करते थे।

दिसंबर, 2006 में वे कंपनी–2 का सदस्य बन गये। सैनिक कार्रवाइयों में कामरेड हितेश शुरू से ही आगे थे। वे आत्म बलिदान की भावना से दुश्मनों का डटकर मुकाबला करते थे। उनकी क्षमता को देखते हुए अलग–अलग कामों की जिम्मेदारी दी जाती थी। वह अपनी जिम्मेदारी को कुशलता पूर्वक निभाते थे।

कंपनी–2 में रहते हुए वे 14 मार्च, 2007 के एतिहासिक रानीबोदली रेइड़ में भी शामिल हुए। तड़केल, पामुलवाय, मिनपा, मोदकपल्ली, तोड़का, कोरसिल, आकाश नगर व नूकनपल्ली जैसी कई छोटे, मध्यम व बडे स्तर की युद्ध कार्रवाइयों में उन्होंने अपनी भूमिका अदा की।

लुटेरे शासक वर्गों के शोषण व अत्याचार को देखकर अपना वर्ग चेतना को बढ़ाते थे। आपरेशन ग्रीन हंट को हराने हेतू, जनयुद्ध को आगे बढ़ाते हुए कामरेड हितेश ने अपनी प्राण न्यौछावर किया। उनकी याद जनता के दिलों में हमेशा जीवित रहेगा!

गडचिरोली डिविजन

बटपर के वीर शहीद

4 अप्रैल, 2013 को गडचिरोली एसपी की संपूर्ण देखरेख में मुखबिरों से सूचना पाकर सैकड़ों पुलिस, सी–60 कमांडो व सीआरपीएफ बलों ने मिलकर पीएलजीए की एक छोटी सी टीम का साजिशपूर्वक घेराव कर उनकी हत्या कर दी।

भामरागढ़ तहसिल के कुछ गांवों में फारेस्ट विभाग द्वारा जंगल का सफाया किया जा रहा था। बीट कटाई करके जंगल संपत्ति को लूटने के लिए फिर एक बार वन विभाग, पुलिस विभाग व ठेकेदार साथ मिलकर लूटने की कोशिश कर रहे थे। बीट कटाई के विरोध में जनता को लामबंद करने के लिए, उनको जागरूक करने के लिए जन मिलिशिया की एक टीम और भामरागढ़ एलजीएस के कामरेड कोशिशों में लगे हुए थे। कुछ दिनों से बटपर के आसपास के गांवों में जन सभाएं आयोजित की गयीं। पुलिस मुखबिरों ने इसकी सूचना अपने आकाओं को दी। सैकड़ों कमांडो बलों को इस काम पर लगाया गया, दर्जन से भी ज्यादा गाड़ियां आईं। उस दिन भामरागढ़ जन मिलिशिया कमांडर कामरेड लक्ष्मण, अम्मी व अन्य एक साथी ग्रामीणों की मीटिंग करने के लिए रात को बुलाए। बटपर व आस–पास के गांवों के युवक–युवतियों समेत जनता उसमें शामिल हुई। पुलिस ने रात को ही इस टीम का घेराव शुरू कर दिया। इस जन मिलिशिया टीम के साथ कुछ युवक–युवतियां भी रात को रुक गई थीं।

सुबह सात बजे कामरेड लक्ष्मण अपनी 303 राइफल को साफ कर रहे थे। वहीं दूसरे कामरेड चाय बनाने की तैयारी कर रहे थे। पुलिस ने तीनों तरफ से इस टीम को घेर लिया। पीछे नदी थी तो तीन तरफ हत्यारे बल। कमांडो बलों ने अंधाधुंध गोलियां बरसाई। कामरेड लक्ष्मण को अपनी बंदूक को फिट करने का मौका भी नहीं मिला कि वह गोलियों का शिकार हो गये। अन्य एक पीएलजीए कामरेड पीछे हटने के क्रम में नदी में कूद गया और तैर कर पार हो गया। वहीं कामरेड अम्मी भी अंधाधुंध फायरिंग में शहीद हो गयी।

जन मिलिशिया टीम के साथ जो युवक–युवतियां रुकी थीं, उनमें से कौंडे गांव के प्रकाश पल्लो, पेनगुंडा के सरदु पुसाल और बटपर की सुनिता ताडो को पुलिस वालों ने पकड़ कर उन्हें वर्दी पहनाकर मार डाला।

पुलिस ने बटपर की साधरण युवती को मारकर दावा किया कि इसमें पीएल–7 की डिप्यूटी कमांडर रीता मारी गयी है। जबकि रीता वहां आसपास में थी ही नहीं। सुनिता के घर वाले गडचिरोली एसपी ऑफिस जब अपनी बच्ची की लाश लेने गए तो पुलिस ने कई दिनों तक उनको इध र–उधर घुमाया और लाश देने से मना किया। वहीं सरदु पुसाल को पीएल–7 का सदस्य दुल्सा बताया गया। ये सारी झूठी बातें पुलिस द्वारा जानबूझकर फैलाई गयी।

प्रस्तुत है बटपर शहीदों की संक्षिप्त जीवनियां

कामरेड लक्ष्मण

जांबाज और बहादुर नौजवान कामरेड लक्ष्मण पश्चिम बस्तर डिविजन, गंगोल एरिया के गंपुर गांव के निवासी थे। मां, बाप ने उनका नाम रानु मड़कामी रखा था। अपनी शहादत के समय वह मात्र 21–22 साल के रहे होंगे। परिवार में एक बड़े भाई और दो बहनें हैं।

2005 में बस्तर की जनता पर फासीवादी सलवा जुडूम दमन अभियान का कहर बरपना शुरू हुआ था। उस समय में स्वभाविक ही वह मिलिशिया के सदस्य बने। वह छोटी उम्र में ही मिलिशिया प्लाटुन में काम करने लगे थे। वह साहस के साथ कार्रवाइयों में भाग लेते थे।

उनका जबर्दस्त गुण था दुश्मन पर बिजली की गति से टूट पड़ना। एक बार एक जन विरोधी मुखबिर को खत्म करने के लिए मिलिशिया गयी तो वहां पर बहुत ही नाजूक स्थिति बन गयी। मुखबिर चाकू लेकर हमले के लिए तैयार हो गया। कोई उसके पास जाने की हिम्मत नहीं कर रहा था। बस कामरेड लक्ष्मण ने उसे चकमा देकर बिजली की तेजी से चाकू पर कब्जा जमा लिया और उसकी ही चाकू उसकी ही छाती में घोंप दिया। वह लंबे व बहुत फूर्तिले कामरेड थे। उसकी फूर्ति हर काम में झलकती थी।

कामरेड रानू 2008 में पीएलजीए में भर्ती हुए थे। 2009 में उनको एसजेडसी सदस्य के गार्ड की जिम्मेदारी प्रदान की गयी। कामरेड लक्ष्मण ने लगभग चार सालों तक उस जिम्मेदारी को बेहद लगन के साथ निभाया। मिनपा, कोर्सेल, तोड़का, कोंगापल्ली जैसे कई हमलों में उन्होंने गार्ड रहते हुए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वहां पर भी वह पहलकदमी के साथ दुश्मन के साथ लड़े। कामरेड लक्ष्मण एक आदर्श गार्ड भी थे।

2011 नवंबर में एसजेडसी गार्ड के तौर पर वह गडचिरोली में बदली हुए थे। उसके बाद उन्होंने 2013 जनवरी तक कंपनी–10 में काम किया। कामरेड लक्ष्मण हर मीटिंग में, समीक्षाओं में या फिर अन्य मौकों पर वह अपनी बातें खुल कर रखते थे।

2013 फरवरी में टीसीओसी चलाने के लिए पीएलजीए सैनिकों के लिए मोटिवेशन मिलिटिरी कैंप का आयोजन किया गया था। कामरेड लक्ष्मण ने वहां पर बहुत ही सक्रिय भूमिका निभाई।

एसजेडसी के दिशानिर्देशों के अनुसार आरसी ने जन मिलिशिया दल गठन करने का निर्णय लिया था। भामरागढ़ एरिया कमेटी ने और डीवीसी ने उनको एरिया मिलिशिया कमांडर नियुक्त किया। उसके साथ मिलिशिया के लिए कामरेड अम्मी व एक अन्य साथी को सदस्य के रूप में जिम्मेदारी दी गयी।

जन मिलिशिया की नई जिम्मेदारी कामरेड लक्ष्मण ने संभाली थी। उनकी टीम को लाहेरी में एक बहुत पुराने समय से काम कर रहे मुखबिर का सफाया करने का कार्यभार दिया गया तो बेहद साहस के साथ कामरेड लक्ष्मण ने उस काम को अंजाम दिया। उनके गढ में जाकर उसका सफाया किया ।

कामरेड लक्ष्मण को हमेशा कुछ न कुछ सीखने की धुन लगी रहती थी। उन्होंने तेलुगू, हिंदी, मराठी, अंग्रेजी आदि भाषाएं सीखने पर अपना ध्यान लगाया। हिंदी को अच्छे से वह सीखने में सफल भी हुए। वह बेहद मेहनती कामरेड थे। अपनी ताकत को पूरा का पूरा बाहर निकालते थे।

गडचिरोली डिविजन ने उभरते हुए एक सक्षम मिलिटिरी कमांडर को खो दिया है। उनकी कमी हर काम में हर जगह खलती रहेगी। कामरेड लक्ष्मण से हमें उनकी हिम्मत व दृढ़ता को सीखना चाहिए, उनकी पहलकदमी को आत्मसात करना चाहिए।

अम्मी पुंगाटि

बटपर हमले में शहीद हुई कामरेड अम्मी पुंगाटी ग्राम आलेंगा में एक मध्यम वर्गीय आदिवासी परिवार में जन्मी थी। उसने पहले गट्टा इलाके के एलओएस में काम किया। शहादत के समय वह भामरागड एरिया में जन मिलिशिया दल में सदस्या के तौर पर काम कर रही थी।

कामरेड अम्मी पुंगाटी एक साहसी व मेहनती कामरेड थी। गांव में उनकी जबर्दस्ती शादी तय की गयी थी। गांव के सियान–मुखिया उन पर शादी रचाने का दबाव डाल रहे थे। उन्होंने इस पितृसत्तावादी दबाव का विरोध किया और अपनी मर्जी और व्यक्तित्व को बचाने की कोशिश में उसने घर छोड़ दिया।

कामरेड अम्मी गांव में रहते हुए सीएनएम में काम करती थीं। फरवरी 2010 में कामरेड अम्मी गट्टा एलओएस की सदस्या के तौर पर पार्टी में भर्ती हुई थीं। 2012 अगस्त में मल्लमपोडुर में 15 अगस्त झूठे स्वतंत्रता दिवस को काले दिवस के रूप में मनाने के लिए पीएलजीए का एक दस्ता गया हुआ था। चारों तरफ से पुलिस आने का समाचार मिला तो प्रोग्राम बंद करके जल्दी वह दस्ता व सांस्कृतिक टीम निकल गयी। लेकिन कामरेड अम्मी वहीं रह गयी थीं। वह सिविल कपड़ों में थीं उसने हिम्मत और संयम के साथ काम लिया। पुलिस ने उससे पूछताछ की तो वह नहीं घबराई और बिना शक के उनसे बच निकलने में सफल हुई।

2013 के मोटिवेशन मिलिटरी कैंप में कामरेड अम्मी ने सैनिक तकनीकों को ध्यान देकर सीखा। सभी ड्रिलों–अभ्यासों में कामरेड अम्मी खुशी के साथ भाग लेती थीं।

हमने एक बहादुर कामरेड को खो दिया है। उनके सपनों को पूरा करने के लिए आइये, उनके रास्ते में आगे बढ़ते हैं।

कामरेड सरदु पुसाल

बटपर हमले में एक किशोर शहीद हुए। उनका नाम था कामरेड सरदु पुसाल उर्फ सुधाकर। उनकी उम्र मात्र 17 साल थी। उनका गांव बटपर के नजदीक का पेनगुंडा है।

कामरेड सुधाकर एक गरीब गोंड आदिवासी परिवार में पैदा हुए थे। उनके दो भाई और एक बहन है। तीनों के सिर से छोटी उम्र में ही मां–बाप का साया उठ गया था। जमीन थोड़ी थी, परिवार का गुजारा बेहद मुश्किल होता था। इस हालत में उनकी बहन कामरेड कुम्मे पीएलजीए में भर्ती हो गयी। 2008 में कामरेड कुम्मे अपने चार और साथियों के साथ दोबुर हमले में शहीद हो गयी थीं। कामरेड कुम्मे की शहादत से दोनों ही भाइयों के दिलों में पुलिस व सरकार के प्रति बेहद नफरत भर गयी थी।

2008 आखरी की बात है, दस्ता उनके गांव में गया हुआ था। जब दस्ता गांव छोड़कर जाने लगा तो सुधाकर झोला पकड़ कर पीछे–पीछे आने लगे थे। उन्होंने कहा, 'मैं अब घर नहीं जाउंगा'। उसकी जिद को देखते हुए दस्ते ने उन्हें अपने साथ ले गया। उसके बाद 2010 में उन्हें बुनियादी कम्युनिस्ट प्रशिक्षण स्कूल में भेजा गया। वहां से प्रशिक्षण प्राप्त कर 2010–11 में उन्होंने कुछ महीने एक एसजेडसी सदस्य के गार्ड के रूप में काम किया था। उसके बाद कंपनी–10 में काम किया।

उनकी चेतना व दृढ़ता को देखकर उन्हें 2012 में पार्टी सदस्यता प्रदान की गयी। कंपनी–10 में रहते हुए उन्होंने तमाम कार्यों में भाग लिया। वह बहुत अच्छे स्काउट थे। 2012 आखिर में प्रतिरोध कार्रवाइयों के दौरान उन्होंने कई दिनों तक स्काउट के रूप में काम किया। ऐसा काम करते हुए फिर अपने घर वापस जाने के इरादे से घर चला गया।

लाहेरी–डोडराज पुलिस को इसका पता चल गया था कि सुधाकर वापस आ चुका है। पुलिस ने उन्हें पकड़ने के लिए प्रयास तेज कर दिये थे। एक बार तो वह बाल–बाल बचे। पुलिस ने गांव को चारों तरफ से घेर लिया था। घर–घर की तलाशी ली जा रही थी। जिस घर में सुधाकर थे वहां पर भी पुलिस गयी। कोना–कोना छान मारा लेकिन वहां सुधाकर नहीं मिला।

जब जन मिलिशिया दस्ता बटपर में था तब वह दस्ते से मिलने आये थे और रात को वहीं रुक गए थे। कामरेड सुधाकर निहत्थे थे। पुलिस ने उनको पकड़कर मार डाला और पीएलजीए की वर्दी पहना दी।

कामरेड प्रकाश पल्लो

कामरेड प्रकाश पल्लो का जन्म गडचिरोली जिले के गांव कौंडे में हुआ था। कामरेड प्रकाश का परिवार एक क्रांतिकारी परिवार है। कामरेड प्रकाश अपने गांव के युवकों के नेता थे। जनता के सामूहिक कामों में वह अपने साथियों के साथ बढ़–चढ़कर भाग लेते थे। गांव के सियान–मुखियाओं के दबाव का वह सदा ही विरोध करते आये। दस्ता जाने से उसके साथ रुकते थे। उसके लिए खाने–पीने की व्यवस्था करते थे। अपनी शहादत के दिन भी वह दस्ते के साथ रुके हुए थे। फायरिंग में पुलिस के हाथों वह भी बटपर में शहीद हुए।

कामरेड सुनिता ताडो

कामरेड सुनिता ताडो का जन्म बटपर के एक गरीब आदिवासी परिवार में हुआ था। गांव की युवितियों में वह पार्टी कामकाज करने में सबसे आगे रहती थीं। गांव में सियान–मुखियाओं का दबाव बहुत है लेकिन वहां की युवतियों का नेतृत्व कर हर काम में वह शामिल होती थीं। वह सीएनएम में काम करती थीं।

सिंदेसूर के बहादुर योद्धा कामरेड पुनेम मंगू उर्फ कैलाश

मई, 2013 में मुखबिर से पक्का समाचार पाकर दुश्मन के बलों ने सिंदेसुर गांव में कामरेड मंगु के एलओएस पर घातक हमला किया था। इस हमले का डटकर मुकाबला करते हुए कामरेड मंगु अपने 5 साथियों समेत शहीद हुए।

सिंदेसूर मुठभेड के दौरान दुश्मन की घेराबंदी को तोड़कर अपने साथियों को सुरक्षित निकालने के लिए दुश्मन के साथ लोहा लेते हुए कॉ. पूनेम मंगु उर्फ कैलाश ने अपनी जान की कुरबानी दी। जांबाज कामरेड कैलाश ने शहादत से पहले एक कमांडो को मौत के घाट उतार दिया। लगभग 18 साल उन्होंने क्रांति के लिए काम किया। शहादत के समय धानोरा एलओएस कमांडर की जिम्मेदारियां निभा रहे थे।

पूनेम मंगु बीजापुर जिला, गंगालूर इलाके के डुमरी परालनार के एक गरीब मुरिया आदिवासी परिवार में करीबन 40 साल पहल में जन्मे थे। वे अपने मां–बाप की चार संतानों में से एक थे। उनकी बहन कॉ. मीना भी पार्टी में काम करती हुई शहीद हो गयी है। उनके बड़े भाई बीमारी से गुजर चुके थे।

जब से गांव में डीएकेएमएस बना तब से ही कॉमरेड मंगु उसमें सक्रिय रूप से भागीदारी करने लगे थे। 1993 में वह डीएकेएमएस में शामिल हुए थे। वह युवक–युवितयों के लिए प्रेरणा का स्रोत थे। अपने गांव में सबसे पहले वही पार्टी में भर्ती हुए थे। बस्तर से गडचिरोली आने वाले दो कामरेडों में वे एक थे। गांव से एक साथ निकले हुए साथी कामरेड रघु भी गडचिरोली के कंडी गांव में 1997 जुलाई में शहीद हुए।

परालनार चूंकि बैलाडिला की पहाडी शृंखला के नीचे स्थित है इसलिए जमीन की कमी के चलते बैलाडिला, बचेली के एनएमडीसी खदानों में कैजुअल मजदूर के रूप में काम करके कॉमरेड मंगु ने अपने परिवार की देखभाल की। वन विभाग के अत्याचारों के खिलाफ गंगालूर की जनता ने जुझारू संघर्ष किए। इन संघर्षों में कॉमरेड मंगु ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। पट्वारीयों के द्वारा अवैध वसूली के खिलाफ मिरतूल, कोंडेली, तारूम, नेलिसनार में डीएकेएमएस रेंज कमेटी के नेतृत्व में जनता को एकताबद्ध करके संघर्ष करने में एवं दोषि पट्वारीयों को दण्डित करने में वो आगे रहे। बांस कटाई मजदूरों के संघर्षों व तेंदुपत्ता तोडाई मजदूरों के संघर्षों में कॉमरेड मंगु न केवल शामिल हुए थे बल्कि इन संघर्षों में जनता को संगठित करने में भी आगे रहे। गंगालूर बाजार में साहुकारों के खिलाफ संघर्ष करके वनोपजों के दाम बढ़ाने में उन्होंने सक्रिय भूमिका अदा की। इस तरह जन संघर्षों को देखकर, उनमे शामिल होते हुए प्रेररणा पाकर कामरेड मंगु 1995 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता के रूप में गुरिल्ला दस्ते में शामिल हो गये।

गंगालूर, बासागुडा इलाके में 6 माह काम करने के बाद क्रान्तिकारी आन्दोलन की जरूरतों की पूर्ति के तहत उनका गढ़चिरोली तबादला किया गया था। आगे–पीछे न होकर क्रान्तिकारी स्फूर्ति के साथ वो गढ़चिरोली गये थे। फिर वहां से बालाघाट भंडारा डिविजन में उनका तबादला हुआ था। वहां कम समय में ही कामरेड मंगु जनता का चहेता बन गये थे। वो वहां एरिया कमेटी सदस्य बन गये थे। जन समस्याओं पर जनता को बड़े पैमाने पर गोल बंद करने में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा।

पार्टी जरूरतों के मुताबिक बाहर जाते समय उनकी गिरफ्तारी हुई थी। 4 – 5 साल वो जेल में बिताये। जेल को संघर्ष के मैदान में तब्दील करने में कामरेड मंगु का योगदान न भूलने लायक था। कई फर्जी केस थोपकर उन्हें जेल में सड़ाने की साजिश का वे हिम्मत के साथ मुकाबला करते रहे। जेल में रहते हुए उन्हें राजनीतिक चचाओं, राजनीतिक पुस्तकों के अध्ययन के जरिये अपनी राजनीतिक चेतना को विकसित करने का मौका मिला। जेल को उन्होंने क्रांतिकारी राजनीतिक स्कूल बना लिया था। जमानत पर रिहा होनेके तुरंत बाद वे बिना किसी ढुलमुलपन के फिर से आन्दोलन में कूद पड़े थे।

गोंदिया डिविजन में दो साल काम करने के बाद उनका तबादला करके उत्तर गढ़चिरोली के टिप्रागढ़ एरिया कमेटी सदस्य के रूप में उन्हें जिम्मेदारी दी गयी थी। वहां वे धनोरा एलओएस कमाण्डर के रूप में जिम्मेदारी संभाली थी। दुश्मन के लगातार बढ़ते दमन के बीच में ही वे जनता के साथ जीवंत संबध स्थापित करते हुए क्रान्तिकारी आन्दोलन को मजबूत करने में लगे थे।

साथी कामरेडों व नेतृत्व में से कुछेक के कमजोर होकर आन्दोलन से भाग जाने के बावजूद कामरेड मंगु क्रान्तिकारी आन्दोलन व जनता पर अटूट विश्वास रखकर आखिरी दम तक लक्ष्य के प्रति समर्पित होकर काम करते रहे।

विगत करीबन 18 सालों के अपने क्रान्तिकारी जीवन में कामरेड मंगु ने कई उतार – चढ़ाव देखें। हिम्मत व

साहस के साथ संघर्ष करते हुए, निस्वार्थ भाव से आन्दोलन में आखिरी दम तक डटे रहे। एक विश्वसनीय, बहादुर, अनुभवी योद्धा व साहसिक गुरिल्ला कमाण्डर कामरेड मंगु को खोना गढ़चिरोली आन्दोलन के लिए अपूरणीय क्षति है।

कामरेड नंदू (देवशा कोला)

कामरेड देवशा कोला उर्फ नंदू सिंदेसूर फायरिंग में शहीद हुए। वे धानोरा एलओएस के उप कमांडर की जिम्मेदारी निभा रहे थे। कसनसूर एरिया के नेंडगूडा गांव के एक मध्यम किसान परिवार में उनका जन्म हुआ था। पास के गांव कोटमी की स्कूल में उसने पढ़ाई की थी। 2008 में वे अपने गांव में ग्राम रक्षा दल के कमांडर थे। 2009 में वे कसनसुर दल में भर्ती हुए थे।

भर्ती होने के बाद वह पीएल–3 के सदस्य बने। भर्ती होने के कुछ समय बाद अगस्त 2009 में पेटा फायरिंग में वह और एक अन्य साथी घायल हो गए थे। लेकिन जल्दी ही वे ठीक हो गए और फिर युद्ध के मैदान में कूद पड़े। 2010 में उनकी बदली टिप्रागढ़ में की गयी और धानोरा एलओएस के सदस्य बने। धानोरा जैसे नये इलाके में उसने अपनी जल्द ही पहचान बनाई।

पार्टी सदस्य के रूप में वह एलओएस के डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी निभा रहे थे। चितेकन्नार, सिंदेसुर आदि मुठभेड़ों में भाग लिया और टीम कमांडर की हैसियत से वह हमेशा पहलकदमी करते थे। घोर दमन के बीचों–बीच वह डट कर काम किये। कभी–कभी तो उनको गडचिरोली तक जाना पड़ता था। विस्तार के रणनीतिक महत्व को समझते हुए वह दृढ़तापूर्वक काम करते थे।

2011 जनवरी में उन्हें टिप्रागढ़ एरिया कमेटी के सदस्य की जिम्मेदारी प्रदान की गयी। क्रांतिकारी जन संगठनों, जनताना सरकारों व जन संघर्षों को संचालित करने में कामरेड नंदू ने अपनी भूमिका बखूबी अदा किया।

कामरेड मंदा अमर रहे!

कामरेड मंदा (थानी आतला) उम्र 16 साल, गांव लेखाटोला तहसीला व जिला गडचिरोली गरीब किसान परिवार में जन्मी होनहार कामरेड थीं। आतला परिवार के पांच संतानो में यह तीसरी संतान थीं। मंदा को पढ़ाई में रुची थी किंतु स्कूल में पढ़ते वक्त ही उनके पिताजी की बिमारी की वजह से मौत हो गयी। कक्षा 7 वीं तक शिक्षा लेने के बाद, घर के कामकाज को संभालने के लिए उन्हें स्कूल छोड़ना पडा। वह 2 दिसंबर, 2011 को पार्टी में भर्ती हुईं। घर में रहते ही वह पीएलजीए की बेस फोर्स याने मिलिशिया के रुप में जनयुध्द में हिस्सा लेती रही। पूर्णकालीन

क्रांतिकारी बनने का इरादा पक्का होनेपर वह दल में भर्ती हुईं। उसका सेवाभावी स्वभाव और सीखने की लगन को देखकर उसे चातगांव एरिया कमेटी के अंतर्गत आनेवाले एलजीएस की डाक्टर टीम में जिम्मेदारी दी गई थी जिसे उसने बहुत अच्छे से निभायी। उसकी दृढता, अनुशासन और जनता के प्रति प्यार और मरमिटने की तमन्ना देखकर उसे सितंबर 2012 में पार्टी सदस्यता दी गई।

सितम्बर 2012 में संपन्न उत्तर गढचिरोली प्लीनम के दिशा निर्देशन पर डीवीसी ने चामोर्शि एरिया का पुनर्गठन करने का निर्णय लिया। कामरेड मंदा नवगठित चामोर्शि दस्ते के साथ एरिया की जनता से मिलने के लिए गई थीं। वहां जनता में क्रांति का प्रचार करने एवं जनसंगठनों के निर्माण में मदद कर रही थीं। इसी बीच 25 नवंबर के दिन आबापूर गांव के पास दुश्मन डेरा पर हमला करने के इरादे से आ रहा था। कामरेड मंदा सेंन्ट्री पर थीं। उसने अपनी जान की परवाह न करते हुए दुश्मन को देखकर फायर किया। जिससे सारे साथी तुरंत अलर्ट होकर दुश्मन के हमले का मुंहतोड़ जवाब देने लगे। इस मुठभेड में कामरेड मंदा ने पुलिस कमांडो बलों का बहादुरी से मुकाबला किया जिसमें पुलिस के तीन जवान गंभीर रूप से घायल हुए। इसी लड़ाई में कामरेड मंदा वीरता से लड़ते हुए शहीद हो गयीं।

हम कामरेड मंदा के अधूरे सपनों को साकार करने दृढ संकल्प लेकर जनयुध्द में आगे बढ़े।

कामरेड मोहन (गेंदलाल)

मोहन उर्फ गेंदलाल पूडो सन्नो और सनकेर पूडो नामक गरीब आदिवासी दंपत्ति की संतान थे। इनके गांव का नाम है मरकेगांव जो गडचिरोली जिले के धानोरा तहसिल में आता है। कामरेड मोहन ने 9वीं कक्षा तक ग्यारापत्ति आश्रम शाला में शिक्षा ग्रहण की थी।

वह बचपन में बाल संगठन में काम करते थे। उसके

बाद जन मिलिशिया कार्रवाईयों में भाग लेने लगे।

कामरेड मोहन ने 2005 में पूर्णकालिन कार्यकर्ता के रूप में अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत की थी। आते ही वह टिप्रागढ़ जन मिलिशिया के दल के साथ जनता की रक्षा करते हुए घूमना शुरू किये। 2007 में उनकी क्षमताओं को देखते हुए एलजीएस में डिप्यूटी कमांडर बना दिया गया। एक साल उन्होंने चातगांव एरिया में भी काम किया। 2008 में पोटेगांव इलाके में वह सिविल आर्गनाइजर होते थे। उसी साल डिविजन में बढ़ते दमन के खिलाफ लड़ने के लिए पलटन–20 का गठन किया गया था। उस साल कामरेड मोहन को उसमें भर्ती किया गया और पलटन पार्टी कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी प्रदान की गयी। और उसे पलटन में एक सेक्शन कमांडर की जिम्मेदारी सौंपी गयी। 2010 में महाराष्ट्र के आंदोलन को मजबूत करते हुए विस्तार करने के लक्ष्य के तहत पलटन का गठन किया गया। इस पलटन के डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेंदारी कामरेड मोहन को सौंपी गयी थी। उस पलटन को गड़चिरोली–गोंदिया डिवीजन में तैनात किया गया। उसके बाद विस्तार पलटन व अन्य को मिलाकर पलटन–56 का गठन किया गया, तब भी कामरेड मोहन को ही इसके डिप्यूटी कमांडर की जिम्मेदारी प्रदान की गयी थी।

कामरेड मोहन 2005 से लेकर 2012 तक के अपने क्रांतिकारी जीवन में कुल मिलाकर 19 शानदार फौजी कार्रवाइयों में भाग लिये। टिप्रागढ जन मिलिशिया में रहते समय 2005 में तीन पुलिस जवानों को मार गिराने की घटना में कामरेड मोहन की भी भूमिका थी। 2005 में सावरगांव में एक जन दुश्मन को सबक सिखाने का कामरेड मोहन ने नेतृत्व किया। 2007 में पेंढरी पुलिस कैंप पर जन मिलिशिया के साथ मिलकर फायरिंग की। 2007 में अचानक मरकेगांव के पास गोलीबारी हुई थी, इसमें एक कामरेड घायल भी हो गया था। कामरेड मोहन ने यहां दुश्मनों का डट कर मुकाबला किया था। 2009 में मुगनेर में हुई मुठभेड़ में 3 पुलिस वाले मारे गए थे, 7 घायल हुए थे। इस हमले में कामरेड मोहन ने स्काउट की भूमिका बखूबी निभाई थी। चिचोड़ा, आगरी, फूलगोंदी, लेकुरबोडी, कोलाटोला, नवाटोला और गांगिण में 2 बार दुश्मन पर किये गए हमलों में कामरेड मोहन ने अपनी भूमिका निभाई।

कामरेड मोहन विकसित होते हुए एक अत्यंत अनुशासित गुरिल्ला कमांडर थे। 2 अक्तुबर को कामरेड मोहन गांव गांगिण में एक काम से गए हुए थे। उनके साथ 3 अन्य कामरेड भी थी। सी–60 कमांडो, पुलिस के साथ अचानक हुई एक मुठभेड़ में कामरेड मोहन गंभीर घायल हो गए थे। पीएलजीए डाक्टरों व साथियों ने बचाने के अनेक प्रयत्न किये लेकिन सफल नहीं हुए। 3 अक्तुबर को हमारे प्यारे कामरेड गेंदलाल पूडो हमसे आखरी लाल सलाम कहकर विदा हो गए। आइये, उनके अधूरे कार्यों को पूरा करने के लिए आगे बढ़े।

कामरेड चंपा

कामरेड चंपा कुरचामी कंपनी–4 की लाल योद्धा थीं। उनका जन्म कोरची तहसिल के गांव रानकट्टा में हुआ था। 2010 में वह अपनी ससुराल में पितृसतात्मक अत्याचारों का शिकार हुई और उन्होंने ऐसे शोषक सामाज को बदलने का बीड़ा उठाते हुए माओवादी पार्टी का दामन थाम लिया।

वह कंपनी–4 में सीएनएम की सदस्या थी। अपने नाच और गाने के साथ जनता को जागरूक करने में चंपा ने अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाई।

मौत सब के लिए बराबर होती है लेकिन सब की मौत हमारे लिए बराबर नहीं होती है। जो जनता के लिए जीते हैं और जनता के लिए मरते हैं, वो महान होते हैं। उनकी मौत हिमालय से भी भारी है और हमारे लिए पीड़ादायक है। ऐसे लोग हमारे लिए आदर्श हैं। जो लोग जन दुश्मनों के लिए जीते हैं और मरते हैं वो नफरत के पात्र हैं। उनकी मौत पंख से भी हल्की है।

(आखरी पेज से ...)

सदस्या थी तो उनके जीवन साथी कमांडर थे। दल को कुरूमवेडा गांव में दुश्मन ने घेर कर बड़ा हमला किया। तब दल सदस्यों की संख्या मात्र 16 थी। जब हमला हुआ तो कमांडर अपनी एसएलआर रायफल को साफ कर रहे थे। अचानक हुए हमले में बंदूक तक संभालने का मौका नहीं मिला। तब कामरेड इंद्रा के पास एक .3006 बंदूक थी जो रिपेयर के बाद मस्केट बनी हुई थी। उसी बंदूक से कामरेड इंद्रा ने 17 गोलियां दागी और पुलिस को आगे बढ़ने से रोका। अपने जीवन साथी सहित तमाम कामरेडों के सुरक्षित पीछे हटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐसी ही परिस्थिति 2004 नवंबर में गांव मानेवारा में बनी, जब पुलिस ने सूचना पाकर हमला किया। तब सभी कामरेडों सहित कामरेड इंद्रा डट कर मुकाबला की थीं। पुलिस या कमांडो बलों का भय उनके आसपास भी नहीं पटकता था। दुश्मन के भीषण दमन के बीच ही उन्होंने जनकार्यों व जनताना सरकार के विकास कार्यों को लागू करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। कठोर दमन के बीच भी वह जनता में जाती थीं और उन्हें हिम्मत प्रदान करती थीं, उन्हें संगठित करती थीं। सामूहिक प्रतिरोध के लिए तैयार करती थीं। हाल ही में मांगेवाड़ा की जनता का प्रतिरोध इसका मिसाल है।

कामरेड इंद्रा ने अकाल विरोधी, शराब विरोधी व अन्य कई आंदोलनों के लिए जनता को संगठित किया और आंदोलन करने के लिए प्रेरित किया।

चातगांव एरिया धानोरा तहसील में आता है। धानोरा तहसिल पहले से ही गैर सरकारी संगठनों का गढ़ रहा है। हर गांव में कोई न कोई गैर सरकारी संगठन होता था। गांवों में हर व्यक्ति किसी न किसी संगठन का सदस्य होता था। कामरेड इंद्रा ने अपने व्यवहार से उस एरिया की जनता का विश्वास जीता। क्रांतिकारी राजनीति के ऊपर जनता के विश्वास को मजबूत किया। उसने एरिया की जनता को समझाया कि कैसे गैरसरकारी संगठन जनता को असली मुद्दों से भटका कर संघर्ष की सोच को ठंडा कर देते हैं, कैसे अच्छे–खासे आंदोलनों को सरकारों व शोषक वर्गों के हितों के लिए इस्तेमाल करते हैं। इस तरह समझाते हुए कामरेड इंद्रा ने जनता को क्रांतिकारी जन संगठनों में गोलबंद किया। उसने आर्थिक मुद्दों पर व झूठे सुधारों की चेतना फैलाने वाले संगठनों के खिलाफ जनता की चेतना को अपनी खुद की राजसत्ता कायम करने की तरफ मोड़ा और उसमें वह सफल हुईं।

क्रांतिकारी जनताना सरकार को खड़ा करना ही नहीं बल्कि उसको मजबूत करने के लिए भी अपनी शहादत तक वह अनवरत अथक मेहनत करती रही। जमीन समतलीकरण अभियान के महत्व को समझनेवाली इन्द्रा क्रांतिकारी जनताना सरकार के नेतृत्व में उसे सफल करने के लिए इलाके में हुई कार्यशालाओं का सफलतापूर्वक मार्गदशन किया। किये काम की समीक्षा कर उसे और आगे बढ़ाने के लिए प्रयास किये। जनताना सरकार के कार्यकर्ताओं के आत्मविश्वास को मजबूत किया।

कामरेड इंद्रा हंसमुख थीं। वह हमेशा हर दुख को, कठिनाईयों को हंस कर सहन करती थीं। उनसे निकलने का प्रयत्न करती थीं। अपने साथियों को समस्याओं से निकालने के लिए उनके साथ उनके दुखों को बांटती थीं। वह दूसरों के गुस्सा होने पर भी संयम से काम लेती थीं उनकी गलतियों को सुधारने की तरफ ध्यान देती थीं। इस प्रकार उसने अपने मातहत काम करने वाले तमाम पार्टी कतारों का विश्वास जीता, उनकी दोस्त और मार्गदर्शक बनी।

कामरेड इंद्रा शुरू से ही अपने विकास के लिए जी–जान से कोशिश करती थीं। उनके प्रयासों और सीखने की लगन को देखते हुए जब वह पार्टी सदस्य थीं तब भी उन्हें 2000 में हुए गडचिरोली के तीसरा अधिवेशन में प्रतिनिधि के तौर पर शामिल किया गया। उसके बाद से गडचिरोली में जितने भी प्लीनम, अधिवेशन हुए वह उनमें सक्रियता के साथ भागीदारी निभायी। गडचिरोली के क्रांतिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाने, डिविजन में आ रही समस्याओं को हल करने में उन्होंने कई अनमोल सुझाव दिये।

हाल ही में सिंदेसुर में दल को घेराव कर किये गये हमले में उनके जीवन साथी कामरेड कैलाश वीरतापर्वूक लड़ते हुए शहीद हुए। उनकी शहादत के बाद कामरेड इंद्रा ही थी जिसने बचे हुए साथियों, जनता और पीएलजीए कामरेडों की हिम्मत बंधाई। जनता के लिए जान देने की भावना को ऊंचा उठाते हुए क्रांति में खूनी बलिदान की अनिवार्यता को रेखांकित किया। कामरेड इंद्रा ने हिम्मत नहीं हारी और अपने जीवन साथी सहित तमाम क्रांतिकारी शहीदों के सपनों को पूरा करने के लिए अपनी आखरी सांस तक काम करती रहीं।

कामरेड इंद्रा को, उनके अथक क्रांतिकारी जीवन व कार्यों के प्रति सिर झुकाकर श्रद्धांजली अर्पित करते हैं। आइये, बहादुर व लोकप्रिय कामरेड इंद्रा के क्रांतिकारी जीवन से सीख लेते हुए उनके सपनों को पूरा करने के लिए आगे बढ़ें।

★

उत्तर गड़चिरोली डिवीजन क्रांतिकारी आंदोलन की जन नेत्री, गड़चिरोली जनता की लाड़ली बेटी कामरेड इन्द्रा (कारम सोमरी) अमर रहे!

चातगांव एरिया की जनता, पार्टी और पीएलजीए सदस्यों को गहरे शोक में डुबेकर उत्तर गडचिरोली डिविजनल कमेटी की सदस्या कामरेड इन्द्रा शहीद हो गयी। कामरेड इंद्रा की शहादत 31 मई, 2013 की रात को एक जहरीले सांप के डंसने से हुई। उनकी शहादत से उत्तर गडचिरोली डिवीजन के आंदोलन व खासतौर से चातगांव एरिया के आंदोलन को अपूरणीय क्षति हुई है।

कामरेड इंद्रा का जन्म करीब 35 साल पहले छत्तीसगढ़ राज्य के बीजापुर जिला ऊरेम गांव में हुआ था। उसके बाद उसके पिता जी जमीन न होने के चलते गंगालूर ब्लाक बैलडिला की नजदीक गांव डुमरी परालनार में आकर बस गये थे। वह मुरिया गोंड जाति के कारम गोत्र में पैदा हुई थी।

उन्हें घर में पढ़ाई के लिए मौका नहीं मिला। उनके मां, बाप का निधन काफी पहले हो चुका है। वह छह संतानों में से सबसे छोटी थीं। कामरेड इंद्रा की एक बहन को सलवा जुडूम के गुंडो ने दरिंदगी के साथ मार डाला था। उनकी भाभी अभी भी सरकारी दमन का शिकार होकर जेल–अदालतों का चक्कर काट रही हैं।

अपनी किशोर अवस्था में ही वह क्रांतिकारी आदिवासी महिला आंदोलन की सदस्या बन गयी थी। 1995 के आसपास उन्होंने क्रांतिकारी राजनीति का प्रचार–प्रसार के लिए बनने वाले युवक–युवतियों के प्रचार दस्तों में भाग लिया। इस तरह काम करते हुए वह 1996 में पेशेवर क्रांतिकारी बन गयी थीं। भैरमगढ एलजीएस से उन्होंने अपने पेशेवर क्रांतिकारी सैनिक–राजनीतिक जीवन की शुरुआत की।

1997 में कामरेड इंद्रा को गडचिरोली भेजने का निर्णय पार्टी ने लिया। उस जमाने में गडचिरोली डिवीजन में पुलिस व कमांडो बलों का आतंक था। 1991 से 1993 तक चले भयानक दमन की आग बुझी नहीं थी। भीषण दमन की परवाह न करते हुए उन्होंने बहादुरी का परिचय दिया और पार्टी द्वारा दी गयी जिम्मेदारी को सहर्ष स्वीकार किया। ऐसी परिस्थितियों में कामरेड इंद्रा ने 1997 से 1999 तक पेरमिली दस्ते की सदस्या के रूप में काम किया। जब भामरागढ और पेरमिली दस्तों को मिलाकर सीजीएस का गठन किया गया तो वह उसकी सदस्या बनी। 1999–2000 में उसने भामरागढ एलजीएस के सदस्या के रूप में अपना योगदान दिया। 2003 में उनको एटापल्ली एरिया पार्टी कमेटी सदस्या के रूप में जिम्मेदारी दी गयी और एटापल्ली दल की कमांडर नियुक्त किया गया। एटापल्ली के गांव–गांव व घर–घर में जाकार उन्होंने जनता के साथ अपना घनिष्ठ संबंध कायम किया। पीएलजीए में युवक–युवतियों की भर्ती करने के लिए सफल प्रयास उन्होंने किये।

2006 आखिर में उनकी बदली क्रांतिकारी आंदोलन की जरूरतों को देखते हुए चातगांव इलाके में की गयी। एटापल्ली व टिप्रागढ इलाकों को पुनर्गठित करते हुए चातगांव नाम से नई एरिया कमेटी का गठन किया गया था। तब कामरेड इंद्रा को चातगांव एरिया कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी दी गयी। कामरेड इंद्रा ने अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाया। उनकी सांगठनिक कुशलता और राजनीतिक परिपक्वता को देखते हुए 2008 में उनको उत्तर गडचिरोली डिविजनल कमेटी की सदस्या नियुक्त किया गया। उत्तर गडचिरोली आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने अविराम कार्य किया।

कामरेड इंद्रा ने अपने साथियों को गैर सर्वहारा रूझानों से निकल कर आदर्श कम्युनिस्ट मूल्यों को अपनाने में उनकी मदद की और गलत रुझानों के खिलाफ तीखा संघर्ष भी चलाया। 2011 में उत्तर व दक्षिण गडचिरोली डिवीजन में भूल सुधार अभियान के लिए चले विशेष प्लीनम में वह अध्यक्ष मंडल की सदस्या थीं।

बहादुर योद्धा कामरेड इंद्रा

जब उनकी बदली एटापल्ली दल में हुई तो वह और उनके पहले जीवन साथी एक ही दल में थे। वह दल की

(शेष पेज 23 में ...)